लफ़्ज़े मौला

पर

चालीस दलीलें

नामे किताब	:	लफ़्ज़े मौला पर चालीस (४०) दलीलें
मोअल्लिफ़-ओ-नाशिर	:	एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम
सने इशाअ़त	:	१४३६ हि.
हदिया	:	५० रुपये

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रह्ीम

अल्लाहुम्मा कुन लेवलीयेकल हुज्जत इब्निल ह्सन स़लवातो-क अ़लैहे व अ़ला आबाएही फ़ी हाज़ेहिस्साअ़ते व फ़ी कुल्ले साअ़तिन वलीयँव्व हाफ़ेज़ँव्व क़ाएदँव्व नास़ेरँव्व दलीलँव्व ऐ़ना ह्त्ता तुस्केनहू अर्ज़-क त़ौआ़ व तोमत्तेअ़हू फ़ीहा त़वीला।

फेहरिस्ते मज़ामीन

१. मुक़द्दमा ४

२. लफ़्ज़े मौला पर चालीस (४०) दलीलें १७

- ❖ मुक़द्दमा २०
- ❖ अदबी दलीलें २२
- ❖ तारीख़ी दलीलें २६
- ❖ दूसरी दलीलें ४२

मुक़द्दमा

ख़ुदा तक पहुँचने का वाहिद रास्ताः

वेलायत और इमामते अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम

मअ़्नए इस्लाम

इस्लाम का मत़लब है 'तस्लीम' *'अल इस्लामो होवत्तस्लीम'* ख़ुदा और रसूल के हुक्म के सामने तस्लीम हो जाना। यअ़्नी उनके हुक्म और मर्ज़ी पसंद और नापसंद के मुक़ाबिल में अपनी कोई राय न रखना। उनकी पसंद को अपनी पसंद और उनकी नापसंदीदगी को अपनी नापसंदीदगी क़रार देना।

ख़ुदा वन्द आ़लम की रुबूबियत ज़िंदगी के किसी एक शोअ़्बे से मख़्सूस़ नहीं है। जिस्म, रूहें, फ़िक्र, ख़याल, अअ़्माल, अख़्लाक़, इन्फ़ेरादी, इज्तेमाई..... ख़ुदा की रुबूबियत का तक़ाज़ा है कि इंसान अपनी ज़िंदगी के हर मरहले में ख़ुदा के अह्काम की पैरवी करे।

ख़ुदा वन्द आ़लम की रुबूबियत की त़रह़ ह़ज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की रेसालत भी किसी एक शोअ़्बए ज़िंदगी से मख़्सूस़ नहीं

है। ख़ुदा "रब्बुल आ़लमीन" है रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम "रह्मतुल्लिल आ़लमीन" हैं।

तस्लीम तक़ाज़ाए ईमान

ख़ुदा वन्द आ़लम ने अपने और अपने रसूल के एख़्तेयार को इस त़रह़ बयान फ़रमाया है:

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ۝٣٦

व मा का-न लेमोअ्मेनिन व ला मोअ्मेनतिन इज़ा क़ज़ल्लाहो व रसूलोहू अम्रन अँय्यकू-न लहुमुल ख़े-य-रतो मिन अम्रेहिम, व मँय्यअ़्सिल्ला-ह व रसूलहू फ़क़द ज़ल-ल ज़लालम्मुबीना।

(सूरए अह़ज़ाब (३३): आयत ३६)

"अगर ख़ुदा और उसका रसूल किसी मसअले में कोई फ़ैसला कर दें तो फिर किसी मोअ्मिन मर्द और मोअ्मिना औ़रत को इस सिलसिले मे कोई एख़्तेयार नहीं है। और जो ख़ुदा-ओ-रसूल की नाफ़रमानी करेगा वोह खुली हुई गुमराही में मुब्तेला होगा।"

क़ुरआन करीम में एक और जगह ह़ज़रत रसूले अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के फ़ैसले के सामने सरापा तस्लीम होने को इस त़रह़ बयान किया गया है:

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتّٰى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِيٓ أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٦٥﴾

फ़ ला व रब्बे-क ला योअ्मेनू-न हत्ता योहक्केमू-क फ़ीमा शजर बै-नहुम सुम-म ला यजेदू फ़ी अन्फ़ोसेहिम ह-रजन मिम्मा क़ज़ै-त व योसल्लेमू तस्लीमा।

(सूरए निसा (४): आयत ६५)

"आप के रब की क़सम उस वक़्त तक येह स़ाहेबे ईमान न होंगे जब तक अपने मसाएल में आप को ह़कम और फ़ैसला करने वाला क़रार न दें और जब आप कोई फ़ैसला स़ादिर करें तो अपने दिल में उसके तअ़ल्लुक़ कोई भी तंगी और ख़लिश महसूस न करें और इस त़रह़ से तस्लीम हो जाएँ जो तस्लीम होने का हक़ है।"

फिर इसी बात को मज़ीद उ़मूमियत के साथ इस त़रह़ बयान किया गया:

وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٧﴾

व मा आताकुमुर्रसूलो फ़खुज़ूहो, व मा नहाकुम अ़न्हो फ़न्तहू, वत्तकुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह शदीदुल एक़ाब।

(सूरए ह़श्र (५९) :आयत ७)

"और जो कुछ तुम्हें ख़ुदा का रसूल दें वोह ले लो और जिन बातों से वोह मनअ़् करें उनसे दूर रहो। ख़ुदा से डरो, यक़ीनन अल्लाह शदीद एक़ाब वाला है।"

इन चंद आयतों पर ग़ौर करने से येह बात पूरी त़रह़ वाज़ेह़ हो जाती है कि इस्लाम का तक़ाज़ा है कि इंसान ख़ुदा और रसूल के अह़काम के सामने पूरी त़रह़ तस्लीम रहे और वोह ज़िंदगी के जिस मसअले में जो भी फ़ैसला कर दें इंसान दिल की गहराइयों से उस फ़ैसले को क़बूल करें और उस फ़ैसले के तअ़ल्लुक़ से दिल में कोई भी ख़लिश मह़सूस न करें। और जिन चीज़ों को रसूल दें उसको ले ले और जिन बातों से मनअ़् करें उससे दूर रहे।

अगर ऐसा न किया यअ़्नी ख़ुदा और रसूल के फ़ैस़ले पर अपनी पसंद को तरजीह दी या उनके फ़ैस़ले की अ़मली मुख़ालेफ़त तो न की लेकिन दिल से पूरी त़रह़ क़बूल नहीं किया बल्कि ख़लिश महसूस की, तो उसका अंजाम खुली हुई गुमराही है। और सूरए ह़श्र की आयत के मुत़ाबिक़ शदीद एक़ाब है।

येह एक त़रफ़, उम्मत के मसाएल के सिलसिले में रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की कैफ़ियत क्या है। क़ुरआन करीम इस त़रह़ से बयान फ़रमाता है।

दर्दमंद पैग़म्बर (स़.अ़.)

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ
حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾

लक़द जाअकुम रसूलुन मिन अन्फ़ोसेकुम अ़ज़ीज़ुन अ़लैहे मा अ़नित्तुम ह़रीसुन अ़लैकुम बिल मोअ़्मेनी-न रऊफ़ुर्रह़ीम।

(सूरए तौबा (९): आयत १२८)

"यक़ीनन तुम्हारे पास वोह पैग़म्बर आया है जो तुम में से है और उस पर तुम्हारी हर मुसीबत शाक़ होती है और वोह तुम्हारी हेदायत के बारे में हिर्स रखता है और वोह मोअ्मेनीन के हाल पर शफ़ीक़ और मेह्रबान है।"

इस आयत से वाज़ेह होता है कि पैग़म्बर अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के दिल में मुसलमानों का कितना दर्द है। वोह मुसीबतें जो मोअ्मेनीन पर पड़ती हैं, पैग़म्बर अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को उससे तकलीफ़ होती है। मुसलमानों की मुश्केलात पैग़म्बर के लिए शाक़ है। इसके अ़लावा उन्हें हेदायत की एक धुन है, फ़िक्र है। हर वक़्त लोगों की हेदायत का ख़याल है। क़ुरआन करीम ने सूरए तौबा की आयत ११७ में येह दोनों स़िफ़तें ख़ुदा के लिए इस्तेअ्माल की है। *'इन्नहू बेहिम रऊफ़ुर्रहीम'* इसके अलावा भी कई मक़ामात पर ख़ुदा के लिए रऊफ़ुर्रहीम की स़िफ़त इस्तेअ्माल की गई है। और सूरए तौबा की आयत १२८ में यही स़िफ़त ह़ज़रत रसूल अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के लिए इस्तेअ्माल हुई है। जिससे अंदाजा होता है कि पैग़म्बर अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम इस दुनिया में स़ेफ़ाते ख़ुदा के मज़हर हैं, ख़ुदा की त़रह़ वोह भी बंदों के हक़ में नेहायत दर्जा शफ़ीक़-ओ-मेह्रबान हैं, रऊफ़-ओ-रह़ीम हैं। जिस त़रह ख़ुदा वन्द आ़लम का कोई हुक्म बंदों के हक़ में ज़ुल्म नहीं है बल्कि उसमें सरासर बंदों ही की भलाई और फ़लाह़ है। उसकी इत़ाअत में उनकी कामियाबी-ओ-सआ़दत है और उसकी मुख़ालेफ़त खुद बंदों की गुमराही और नतीजे में दर्दनाक अ़ज़ाब का सबब है। इसी त़रह़ ह़ज़रत पैग़म्बर अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम का हर फ़ैस़ला (अगरचे आँहज़रत का कोई भी फ़ैस़ला उनकी अपनी मर्ज़ी से नहीं होता बल्कि *मा*

यन्तिक़ो अनिल हवा की रोशनी में उनका हर फ़ैसला और हर बात ख़ुदा का फ़ैसला है) मोअ्मेनीन के लिए ख़ैर ही ख़ैर है। उनकी इत़ाअ़त और फरमाँबरदारी में सआदत और कामियाबी है। मुख़ालेफ़त में गुमराही और दर्दनाक अ़ज़ाब है।

क्या मुम्किन है कि पैग़म्बर स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम अपना जानशीन मुअय्यन न करें

इन बातों को मद्दे नज़र रखते हुए क्या येह मुम्किन है कि पैग़म्बर अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम उम्मत के अहम तरीन मसअले को नज़र अंदाज़ कर दें। दुनिया में एक आम इंसान जिसके पास बस मअ्मूली अ़क्ल-ओ-शऊर हो अगर वोह कोई कारख़ाना क़ाएम करे जिसमें नेहायत क़ीमती सामान तैयार होता हो और उसके अहम राज़ स़िर्फ़ उसी को मअ्लूम हों काम करने वालों की अक्सरीयत उन उमूर में गहरी और कामिल मअ्लूमात न रखती हो, तो क्या वोह अपने बअ्द के उमूर अक्सरीयत के हवाले कर देगा। वोह जिसका चाहे इन्तेख़ाब करें, जबकि उनमें एक ऐसा फ़र्द मौजूद हो जिसकी मालिक ने इब्तेदा से तरबियत की हो। सारे असरार-ओ-रुमूज़ उसको तअ्लीम दिए हों। हर एक बात से उसको आगाह किया हो। और वोह वाक़ेअ़न-ओ-हक़ीक़तन मालिक जैसा हो। तो आया दर्दमंद अक़्लमंद मुस्तक़्बिल के बारे में फ़िक्रमंद मालिक अपने बअ्द के मसाएल को वाज़ेह किए बग़ैर चला जाएगा और कारख़ाने का मुस्तक़्बिल अक्सरीयत के रह्म-ओ-करम पर छोड़ देगा?

या अपनी ज़िंदगी में उस फ़र्द को मुअ़य्यन करेगा जो उस जैसा हो और हर एक बात से वाक़िफ़ हो तमाम असरार-ओ-रुमूज़ से आगाह हो।

एक आम अक़्ल का फ़ैसला यही है कि मालिक अपने इंतेक़ाल से पहले इंतेज़ाम करके जाएगा।

वोह रसूल जो मोअ्मेनीन के ह़क़ में ख़ुदा की त़रह़ रऊफ़-ओ-रह़ीम हो, उससे येह बात क्यों कर मुम्किन है कि उन्हें अपने इंतेक़ाल का यक़ीन हो और वोह उम्मत की इ़ल्मी और अ़मली ह़ालत से बख़ूबी वाक़िफ़ हों और उम्मत के लिए कोई रहनुमा ख़लीफ़ा मुअ़य्यन किए बग़ैर चले जाएँ?

हमेशा रहनुमा ख़ुदा ने मुअ़य्यन किया है

इस के अ़लावा रऊफ़-ओ-रह़ीम परवरदिगार ने इंसानों की हेदायत के लिए ख़ुद उन्हें येह इख़्तेयार नहीं दिया कि वोह ख़ुद अपनी स़वाबे दीद से अपने लिए कोई रहनुमा और नबी मुअ़य्यन कर लें और ख़ुदा उनके मुन्तख़ब करदा नबी को तस्लीम कर ले। बल्कि ख़ुदा वन्द आ़लम ने इंसानों की हेदायत के लिए ख़ुद अपनी त़रफ़ से नबी मुअ़य्यन किया। उम्मत का काम ख़ुदा के मुअ़य्यन करदा नबी को तस्लीम करना और उसकी इताअ़त करना है। नबी मुअ़य्यन करना नहीं है।

इसी त़रह़ ख़ेलाफ़त-ओ-इमामत का मसअला भी है। यहाँ भी उम्मत का काम अपने लिए रहनुमा मुअ़य्यन करना नहीं है। बल्कि जिसको रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम मुअ़य्यन फ़रमा गए उसको तस्लीम करना है। ह़ज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने दअ़्वते ज़ुलअ़शीरा से ग़दीरे ख़ुम तक हर हर क़दम पर मुख़्तलिफ़ मुनासेबतों से ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम और उनके ग्यारह मअ़्सूम फ़रज़न्दों को अपना

जानशीन और ख़लीफ़ा और उम्मत का बिला शिरकते ग़ैर, रहनुमा मुअय्यन फ़रमाया है। ग़दीर में *मन कुन्तो मौलाहो* के ज़रीए इस एअ्लान को आख़री और ह़त्मी शक्ल दी और हर एक से बैअ़त ले कर क़यामत तक हुज्जत तमाम कर दी।

रेसालत-ओ-इमामत बाबे ख़ुदा

इमामत और ख़ेलाफ़त की बह्स सिर्फ़ तारीख़ी बह्स नहीं है। नबी सिर्फ़ ख़ुदा की जानिब से अह्कम पहुँचाने वाला नहीं होता। बल्कि वोह ख़ुदा की बारगाह में ह़ाज़िर होने का दरवाज़ा होता है। अगर कोई ख़ुदा की बारगाह में ह़ाज़िर होना चाहता है तो उसके लिए ज़रूरी है कि वोह रसूल की रेसालत-ओ-नबूवत का इक़रार करे ताकि ख़ुदा की बारगाह में उसकी इबादत क़बूल हो सके। क़ुरआन करीम ने इस ह़क़ीक़त को इस त़रह़ बयान फ़रमाया है:

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۱﴾

कुल इन कुन्तुम तोहिब्बूनल्ला-ह फ़त्तबेऊ़नी योहबिबकुमुल्लाहो व यग़्फ़ेरो लकुम ज़ुनू-बकुम, वल्लाहो ग़फ़ूरुर्रहीम

(सूरए आले इमरान (३): आयत ३१)

"ऐ पैग़म्बर आप इनसे कह दीजिए अगर तुम ख़ुदा से मोह़ब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो ख़ुदा तुमको अ़ज़ीज़ रखेगा और तुम्हारे गुनाहों को भी

मआ़फ़ कर देगा और अल्लाह गुनाहों को बड़ा मआ़फ़ करने वाला और बड़ा मेह्रबान है।”

यअ़्नी अगर कोई पैग़म्बर को नज़र अंदाज़ करके ख़ुदा से मोह़ब्बत करना चाहता है सई राएगाँ होगी। ख़ुदा से मोह़ब्बत का रास्ता पैग़म्बर की पैरवी है। यअ़्नी ख़ुदा की बारगाह में अक़ीदए नबूवत और पैरवीये रेसालत के बग़ैर रसाई मुम्किन नहीं है। अगर कोई पैग़म्बर के ज़रीए़ जाएगा तो उसको ख़ुदा की मोह़ब्बत भी मिलेगी और उसकी गुनाहें भी मआ़फ़ होंगी।

वसीलए मग़्फ़िरत

ज़रा इस आयत पर तवज्जोह फ़रमाएँ:

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ
وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾

व लौ अन्नहुम इज़ ज़-लमू अन्फ़ो-सहुम जाऊ-क फ़स्तग़्फ़रुल्ला-ह वस्तग़्फ़-र लहुमुर्रसूलो ल-व-जदुल्ला-ह तव्वाबर्रह़ीमा

(सूरए निसा (४): आयत ६४)

“जिन लोगों ने अपने नफ़्सों पर ज़ुल्म किया है। गुनाहें अंजाम दी हैं। ऐ रसूल अगर वोह आप के पास आएँ और यहाँ आकर इस्तेग़फ़ार करें और आप भी उनके ह़क़ में इस्तेग़फ़ार करें तो येह लोग यक़ीनन ख़ुदा को तौबा क़बूल करने वाला और मेह्रबान पाएंगे।”

इस आयत से वाज़ेह होता है - अगर इंसान अपने गुनाहों की मग़्फ़ेरत चाहता है तो इसका सहीह तरीक़ा येह है कि पहले हज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो और उनके सामने ख़ुदा की बारगाह में इस्तेग़्फ़ार करे और फिर रसूल भी उसके हक़ में इस्तेग़्फ़ार करें तब ख़ुदा गुनाहों को मआ़फ़ करेगा।

ख़ुदा से क़ुरबत और गुनाहों की मग़्फ़ेरत के लिए रसूल के पास आना ज़रूरी है। यअ़्नी रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ख़ुदा की बारगाह में हाज़िर होने का दरवाज़ा हैं। अब अगर कोई किसी और रास्ते से ख़ुदा की बारगाह में हाज़िर होने का इरादा करेगा तो वोह हरगिज़ हरगिज़ ख़ुदा तक नहीं पहुँचेगा।

अहम सवाल

इस बयान की रोशनी में एक नेहायत अहम सवाल येह है और येह सवाल हर दौर से मुतअ़ल्लिक़ है येह सवाल आज भी नेहायत दर्जा अहम है कि हज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने अपने बअ़्द ख़ुदा की बारगाह में हाज़िर होने के लिए किस को दरवाज़ा क़रार दिया है? या रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बअ़्द येह दरवाज़ा बंद हो गया?

अगर हम किसी ऐसे को अपना रहनुमा क़रार दें जिसको ख़ुदा और रसूल ने मुअ़य्यन न किया हो तो उसकी मोहब्बत और पैरवी हमको किसी भी स़ूरत में ख़ुदा तक नहीं पहुँचाएगी। बल्कि दरअस़्ल ख़ुदा से दूरी का सबब होगी।

तारीख़ और ह़दीसे मुतवातिर गवाह है कि ह़ज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ख़ुदा के हुक्म से ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को दरवाज़ा क़रार दिया। उनको अपना जानशीन, वस़ी और ख़लीफ़ा क़रार दिया। ग़दीरे ख़ुम के तारीख़ी मज्मअ़् में जो तरीख़ी खुत़्बा दिया उसमें जगह जगह अपने बअ़्द के ख़ुलफ़ा का तआरुफ़ कराया। और ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को इस त़य्यब-ओ-त़ाहिर सिलसिलए हेदायत की पहली कड़ी और फ़र्दे अव्वल के त़ौर पर सबके सामने पेश किया। और हर एक से बैअ़त भी ली। येह सब इस लिए था कि आँह़ज़रत स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को उम्मत की हेदायत-ओ-नजात की हद दर्जा फ़िक्र थी वोह अपनी त़रफ़ से हेदायत के तमाम रास्ते हमवार कर देना चाहते थे। ज़लालत-ओ-गुमराही के तमाम दरवाज़े बंद कर देना चाहते थे। अगर आज उम्मत ख़ुदा-ओ-रसूल के मुअ़य्यन करदा ह़ज़रत अ़ली बिन अबी त़ालिब अ़लैहेमस्सलाम और उनके ग्यारह फ़र्ज़न्दों को अपना इमाम और रहनुमा तस्लीम करती तो कभी भी ज़लालत-ओ-गुमराही का शिकार न होती।

ह़ज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ग़दीरे ख़ुम में *मन कुन्तो मौलाहो फ़हाज़ा अ़लीयुन मौलाहो* के ज़रीए बाक़ाएदा ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत और ख़ेलाफ़त का एअ़्लान फ़रमाया। मगर जो लोग येह तय किए बैठे थे कि ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत को तस्लीम नहीं करेंगे उन्होने इस बात की भरपूर कोशिश की कि लफ़्ज़े मौला की वोह तफ़सीर की जाए जिससे वेलायत-ओ-ख़ेलाफ़त के अ़लावा हर चीज़ समझ में आए। इस त़रह़ लोगों ने ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम और उनके ग्यारह मअ़्सूम फ़र्ज़न्दों को इमामत-ओ-ख़ेलाफ़त से मह़रूम नहीं किया बल्कि इस दरवाज़े से लोगों को मुन्ह़रिफ़ कर दिया जो ख़ुदा तक पहुँचने का वाहिद रास्ता था।

ज़ेयारते जामेआ के येह फ़िक्रे कितने बलीग़ हैं:

> **"जो ख़ुदा तक पहुँचना चाहता है वोह आप (अह्लेबैत अ.स.) से शुरूअ् करता है। और जिसने ख़ुदा की वह्दानियत का इक़रार किया उसने आप से तौह़ीद की तअ्लीम ह़ासिल की और जो ख़ुदा का इरादा करता है वोह आप की त़रफ़ रुख़ करता है।"**
>
> **"जिसने आप की मुख़ालेफ़त की उसका ठिकाना जहन्नम है। जिसने आप (की वेलायत-ओ-इमामत) का इंकार किया वोह काफ़िर है। जिसने आप से जंग की वोह मुश्रिक है। जिसने आप की बातों को रद्द किया वोह जहन्नम के पस्त तरीन दर्जे में होगा।"**

इन जुम्लों से वाज़ेह होता है कि अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की वेलायत-ओ-इमामत के अ़क़ीदे के बग़ैर ख़ुदा तक रसाई ना मुम्किन है। और ख़ुदा तक रसाई ही इस्लामी तअ्लीम की रूह़ है। अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की इमामत-ओ-वेलायत के बग़ैर इस्लाम बेरूह़ है। अगर ख़ुदा तक पहुँचना है और अपनी हर इ़बादत में *'क़ुर्बतन एलल्लाह'* के मफ़्हूम को वाक़ेअ़न ह़ासिल करना है तो उसके लिए अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की वेलायत-ओ-इमामत का अ़क़ीदा ज़रूरी है। जिस सिलसिले के फ़र्दे अव्वल ह़ज़रत अ़ली इब्ने अबी त़ालिब अ़लैहेमस्सलाम हैं। और ह़ज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम फ़र्दे आख़िर हैं। येह है ह़ज़रत रसूले ख़ुदा के बअ्द हेदायत-ओ-नजात का पाकीज़ा सिलसिला। ह़ज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की इस ह़दीस पर अपनी बात को हुस्ने ख़ेताम देते हैं।

इब्ने अबिल ह़दीद मोअ्तज़ली सुन्नी ने नहज़ुल बलाग़ा के ख़ुत्बा नंबर १५४ की शर्ह़ करते हुए हज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की येह ह़दीस नक़्ल की है।

आँह़ज़रत स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

> **"जिसे येह पसंद है कि मेरी जैसी ज़िंदगी बसर करे और मेरी त़रह़ इस दुनिया से जाए और उस जन्नते अ़द्न में रहे जिसको मेरे परवरदिगार ने तैयार किया है। उसके लिए ज़रूरी है कि मेरे बअ़्द अ़ली को अपना वली क़रार दे और उनके दोस्तों को दोस्त रखे और मेरे बअ़्द अइम्मए मअ़्सूमीन** अ़लैहिमुस्सलाम **की पैरवी करे यक़ीनन यही ह़ज़रात मेरी इतरत हैं। मेरी त़ीनत से पैदा किए गए हैं इनको इल्म-ओ-फ़ह्म अ़त़ा किया गया है। मेरी उम्मत के जो लोग इनकी तकज़ीब करें उनके लिए जहन्नम है और उनके लिए भी अ़ज़ाब है जो इनसे रिश्ता मुन्क़तअ़् करें। ख़ुदा वन्द आ़लम उनको मेरी शफ़ाअ़त नस़ीब नहीं करेगा।"**

सिलसिलए इमामत की आख़री कड़ी ह़ज़रत हुज्जतिब्निल ह़सन अल-अ़स्करी अ़लैहेमस्सलाम की ख़िदमत में ईदे सईद, ईदे अकबर ग़दीर की मुबारक बाद पेश करते हुए उनके आबाए त़ाहेरीन के वास्ते से दस्त बदुआ हैं कि हमें ज़िंदगी के आख़री लम्हात तक अपने दामने वेलायत-ओ-इमामत से मुतमस्सिक रहने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए। आमीन।

लफ़्ज़े मौला पर चालीस (४०)

दलीलें

ह़दीसे ग़दीर अपनी सनद के एअ्तेबार से मुतवातिर और यक़ीनी है। १८ ज़िल्हिज्जा सन १० हिजरी को रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने एक लाख से ज़्यादा अंसार-ओ-मुहाजिर के मज्मेअ् में *"मन कुन्तो मौलाहो फ़हाज़ा अ़लीयुन मौलाहो"* के ज़रीए ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की बिला फ़स्ल वेलायत-ओ-रहबरी का एअ्लान फ़रमाया। अब हक़ से फ़रारी और मुतअ़स्सिब अफ़राद के लिए कोई बहाना बाक़ी नहीं है। मगर सिर्फ़ येह कि वोह लफ़्ज़े 'मौला' के मअ्ना में बह्स करें और रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के मन्शा के खेलाफ़ इसकी तौजीह़ और तफ़सीर करें। वाक़ेअन शैतान के शागिर्द कितने होशियार हैं!

येह वोह रविश है जिसको अह्ले सुन्नत के बअ्ज़ उ़लमा ने अपनाया है जिसमें फ़ख़्रुद्दीन राज़ी और क़ाज़ी अ़ज़दाएजी और नज़रुल्लाह काबुली स़ाहबे अल-स़वाकेअ पेश पेश हैं। और उन्हीं नक़्शे क़दम पर बअ्ज़ हिन्दुस्तानी उ़लमा ने भी चलने की कोशिश की है जैसे शाह वलीयुल्लाह देहलवी साहबे तोहफ़ा, साहबे लुमआत अ़ब्दुल हक़ देहलवी, सैफ़ुल मसलूल के मुस़न्निफ़ क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती और ..... उन लोगों ने नादान अ़वाम से हक़ को पोशीदा रखने की भरपूर कोशिश की है। यही वजह है कि उ़लमाए शीआ और उ़लमाए अह्ले सुन्नत के दरमियान लफ़्ज़े

मौला का मफ़्हूम गरमा गरम बह्स का मौज़ूअ् रहा है और आज भी उसी आब-ओ-ताब के साथ बाक़ी है।

उ़लमाए शीआ़ लफ़्ज़े "मौला" का जो मफ़्हूम बयान करते हैं उसके मुताबिक़ इसका मफ़्हूम अमीर, सरपरस्त, मुहाफ़िज़, औला बित्तसर्रुफ़ ..... है इस बयान की रोशनी में रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की ह़दीस का मफ़्हूम येह हुआ कि मैं जिसका अमीर 'सरपरस्त' मुहाफ़िज़ और औला बित्तसर्रुफ़ हूँ अ़ली अ़लैहिस्सलाम को भी उसके ह़क़ में यही तमाम बातें ह़ासि़ल हैं। इस बेना पर ग़दीर के दिन रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की ख़ेलाफ़त, इमामत और वेलायत का ए़अ्लान फ़रमाया है। लेकिन अह्ले सुन्नत के उ़लमा इसका कुछ और मफ़्हूम बयान करते है। वोह 'मौला' के मअ़्ना दोस्त बयान करते हैं इस बेना पर रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की ह़दीस का मफ़्हूम येह हो गया; मैं जिसका दोस्त हूँ अ़ली भी उसके दोस्त हैं। उ़लमाए अह्ले सुन्नत ने इस मफ़्हूम के लिए कुछ दास्तानें भी तैयार कर ली हैं और इस ह़दीस को उन दास्तानों से मर्बूत क़रार दिया है। कभी कहते हैं कि ह़ज़रत अ़ली और ज़ैद बिन ह़ारिस के दरमियान इख़्तेलाफ़ हो गया। ज़ैद ने ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत का इंकार किया। उस वक़्त रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ज़ैद को तंबीह करने के लिए येह ह़दीस इरशाद फ़रमाई- जबकि ज़ैद बिन हारिस ह़ज्जतुलवेदाअ़् से पहले ही शहीद हो चुके थे। वाक़ेआ गढ़ना कितना आसान और निभाना कितना मुश्किल। इस मुश्किल से बचने के लिए बअ़्ज़ लोगों ने एक और दास्तान जोड़ी कि येह वाक़ेआ ज़ैद बिन हारिस का नहीं बल्कि ओसामा बिन ज़ैद से मुतअ़्ल्लिक़ है। जबकि बअ़्ज़ उ़लमा ने एक और क़िस्सा तैयार किया कि कुछ लोग जो यमन में ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के हमराह

थे जिनमें बुरैदा अल-अस्लमा और ख़ालिद बिन वलीद थे। उन लोगों ने यमन की वापसी पर रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की ख़िदमत में ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की शिकायत की और जब रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने देखा इस त़रह़ के वाक़ेआ़त बढ़ते जा रहे हैं उस वक़्त ह़ज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने लोगों को जमअ़् किया और ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की मोहब्बत और उनसे दुश्मनी न रखने के बारे में ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया और उसके बअ़्द येह ह़दीस बयान फ़रमाई- येह बात वाज़ेह है कि दोनों ख़ुद साख़्ता वाक़ेआ़त उन मुतवातिर रवायतों का मुक़ाबला नहीं कर सकते हैं जिन को अह्ले सुन्नत के अक्सर मुह़द्देसीन, मुवर्रेख़ीन और मुफ़स्सेरीन ने नक़्ल किया है। येह सारे वाक़ेआ़त ग़दीर की अहम्मीयत को घटाने के लिए तैयार किए गए हैं।

इन बातों की बेना पर रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की येह ह़दीस ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की ख़ेलाफ़त-ओ-इमामत से मुतअ़ल्लिक़ न होगी। इस बेना पर लफ़्ज़े 'मौला' से मुतअ़ल्लिक़ बह़्स दरअस्ल ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की ख़ेलाफ़त-ओ-इमामत की बह़्स है जो दूसरों के ज़रीए़ ग़स्ब कर ली गई। येह बह़्स स़िर्फ़ अदबी या लुग़वी बह़्स नहीं है।

उ़लमाए शीआ़ ने अपने नज़रियात की ताईद में बेपनाह दलीलें पेश की हैं और अभी तक उनका कोई मअ़्क़ूल जवाब न मिल सका। हाँ ह़क़ पोशीदा नहीं रखा जा सकता है। हम उन दलीलों को मुतअ़द्दिद ह़िस़्सों में तक़्सीम करते हैं:

१. मुक़द्दमा

२. अदबी दलीलें

३. तारीख़ी दलीलें

४. दूसरी दलीलें और क़राएन

मुक़द्दमा

लफ़्ज़े 'मौला' के मअ्ना से मुतअ़ल्लिक़ बह्स शुरूअ् करने से पहले और मअ्ना औला बित्तसर्रुफ़ व औला बेनफ़्स की वज़ाहत से पहले, इस बात की त़रफ़ तवज्जोह ज़रूरी है कि येह बह्स सिर्फ़ उन रवायतों से मुतअ़ल्लिक़ है जहाँ पर ह़दीस इन अल्फ़ाज़ में नक़्ल हुई है।

مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ فَهٰذَا عَلِيٌّ مَوْلَاهُ

मन कुन्तो मौलाहो फ़ अ़लीयुन मौलाहो या फ़हाज़ा अ़लीयुन मौलाहो

जबकि बअ्ज़ रवायतों के मुत़ाबिक़ येह ह़दीस इस सूरत में नहीं है बल्कि एक और अंदाज़ से नक़्ल हुई है, जहाँ इस शुब्हे की गुंजाइश नहीं है। येह ह़दीसें रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बअ्द ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-ख़ेलाफ़त को और वाज़ेह अंदाज़ में बयान करती हैं। वोह रवायतें इन अल्फ़ाज़ में नक़्ल हुई हैं।

(अ) .तबरानी मोअ्जमे कबीर ५/१८६ में ज़ैद बिन अरक़म से इस त़रह़ बयान करते हैं:

ثُمَّ اَخَذَ بِيَدِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَقَالَ مَنْ كُنْتُ اَوْلٰى بِهٖ مِنْ نَفْسِهٖ فَعَلِيٌّ وَلِيُّهٗ

सुम्मा अ-ख़-ज़ बेयदे अ़लीयिन रज़ेयल्लाहो अ़न्हो फ़क़ा-ल मन कुन्तो औला बेही मिन नफ़्सेही फ़अ़लीयुन वलीयेही।

"मैं जिस पर औलवीयत रखता हूँ अ़ली भी उसके वली हैं।"

इन्हीं अल्फ़ाज़ को मुअल्लिफ़े तोहफ़ा इस्ना अ़शरीया, शाह वलीयुल्लाह के शागिर्द क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती ने अपनी किताब "सैफ़ुल मसलूल" में नक़्ल किया है।

(ब) सिब्ते इब्ने जौज़ी ने तज़्केरतो ख़वास़िल उम्मा स़.३२ में मौला के मअ़्ना औला लिए हैं और इसकी दलील ख़ुत्बए ग़दीर का येह जुम्ला:

فَاَخَذَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ وَ سَلَّمَ بِيَدِ عَلِيٍّ وَ قَالَ مَنْ كُنْتُ وَلِيَّهٗ وَ اَوْلٰى بِهٖ مِنْ نَفْسِهٖ فَعَلِيٌّ وَلِيَّهٗ

फ़ अ-ख़-ज़ रसूलुल्लाहे स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **बेयदे अ़लीयिन व क़ा-ल मन कुन्तो वलीयेही व औला बेही मिन नफ़्सेही फ़अ़लीयुन वलीयेही।**

क़रार दिया है जिसको ह़ाफ़िज़ अबुल फ़रज, यहया बिन सईद इस्फ़हानी ने नक़्ल किया है।

(ज) ह़म्बली फ़िर्क़े के पेशवा अहमद ह़म्बल अपनी मुस्नद ५/३५८,३५९,३६० में बुरैदा अल अस्लमा से और वोह रसूलुल्लाह से येह रवायत नक़्ल करते है कि आँह़ज़रत ने फ़रमाया।

مَنْ كُنْتُ وَلِيَّهٗ فَعَلِيٌّ وَلِيَّهٗ

मन कुन्तो वलीयेही फ़अलीयुन वलीयेही।

"मैं जिसका वली हूँ अ़ली उसके वली हैं।"

इसी रवायत को नेसाई ने ख़साएस़, स़. ४,९३,१०१,१०३ में अ़ली अ़लैहिस्सलाम, बुरैदा और सईद से नक़्ल किया है इब्ने माजा ने अपनी सुनन १/४२ बर्रा बिन अ़ाज़िब और दीगर स़हाबा से नक़्ल किया है इनके अ़लावा अह्ले सुन्नत के दीगर मुह़द्देसीन ने भी इस रवायत को नक़्ल किया है।

इसी त़रह जुम्ला *'मन कुन्तो मौलाहो फ़ अ़लीयुन मौलाहो'* इन तीन स़ूरतों में नक़्ल हुआ है इससे मअ़्लूम होता है कि ह़दीसे नबवी में लफ़्ज़े मौला से औला और स़ाहबे एख़्तेयार मुराद है। क्योंकि ह़दीसें एक दूसरे की वज़ाहत करती हैं। बहरह़ाल इस अहम बह़्स को आगे बढ़ाते हुए लफ़्ज़े मौला से मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तुगू का आग़ाज़ करते हैं।

अदबी दलीलें

(१) उ़लमाए शीआ और उ़लमाए अह्ले सुन्नत के नज़रियात के दरमियान बेहतरीन फ़ैस़ला करने वाली लुग़त और अ़रबी अदब की किताबें हैं, देखना चाहिए कि अ़रबी ज़बान में येह लफ़्ज़ किस मअ़्ना में इस्तेअ़्माल हुआ है। अह्ले सुन्नत के बअ़्ज़ उ़लमा जैसे फ़ख़्रुद्दीन राज़ी का दअ़्वा है कि अ़रबी ज़बान में येह लफ़्ज़ हरगिज़ औला बित्तस़र्रुफ़ के मअ़्ना में इस्तेअ़्माल नहीं हुआ है। दर्ज ज़ैल बातों से इस दअ़्वा की हक़ीक़त वाज़ेह हो जाती है।

(२) अह्ले सुन्नत के बहुत से अदीबों और मुफ़स्सिरों ने लफ़्ज़े मौला के मअ्ना औला क़रार दिए हैं इस त़रह़ के अदीबों और मुफ़स्सिरों की तअ्दाद कम से कम ५० है। उन गवाहियों के बावजूद कोई मुतअस्सिब येह दअ्वा कर सकता है कि लफ़्ज़े मौला हरगिज़ औला के मअ्ना में इस्तेअ्माल नहीं हुआ है और क्या उन गवाहियों की मौजूदगी में जुम्ला *'मन कुन्तो मौलाहो फ़ अलीयुन मौलाहो'* का मफ़्हूम इसके अ़लावा कुछ और हो सकता है कि मुझे जिस पर औलवीयत हासि़ल है अ़ली को भी उस पर औलवीयत हासि़ल है और क्या ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की इमामत के लिए येह जुम्ला काफ़ी नहीं है?

(३) मौला 'औला' के मअ्ना में इस्तेअ्माल हुआ है इसके लिए बेहतरीन दलील ख़ुद क़ुरआन मजीद है। क़ुरआन मजीद की मुतअ्द्दिद आयतों में येह लफ़्ज़ औला के मअ्ना में इस्तेअ्माल हुआ है। ख़ुदा वन्द आ़लम का इर्शाद है:

مَأْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ مَوْلٰىكُمْ

मावाकुमुन्नारो हेया मौलाकुम

अह्ले सुन्नत के अ़ज़ीम मुफ़स्सेरीन जैसे कल्बी ज़ज्जाज, फ़रा, अबू उ़बैदा, अख़फ़श, अबू ज़ैद, मबरद, इब्नुल अब्नारी, अ़ली बिन ईसा, सअ्लबी, वाहेदी, ज़म्ह़शरी, बग़वी, बैज़ावी और नस्फ़ी वग़ैरह ने इस आयत के मअ्ना येह बयान किए है कि तुम्हारा ठिकाना ज़हन्नम वही तुम्हारे लिए औला है। अगर हम इस आयत का मफ़्हूम वोह बयान करें जो अह्ले सुन्नत ह़दीसे ग़दीर का बयान करते हैं तो बात मज़्हका ख़ेज़ हो जाएगी कि

तुम्हारा ठिकाना ज़हन्नम है वही तुम्हारी दोस्त है। फ़ख़्रुद्दीन राज़ी जैसे अफ़राद जो मौला के मअ्ना "औला" क़रार नहीं देते है वोह अपने रहबरों की त़रह़ क़ुरआनी मत़ालिब से बेख़बर हैं।

(४) ह़दीसों में भी मौला 'औला' के मअ्ना में काफ़ी इस्तेअ्माल हुआ है। रसूल अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

اَلْاِمْرَاةُ نَكَحَتْ بِغَيْرِ اِذْنِ مَوْلٰيهَا فَنِكَاحُهَا بَاطِلٌ

अल इम्रातो न-कह़त बेग़ैरे इज़्ने मौलाहा फ़निकाह़ोहा बात़िल

"अगर कोई औ़रत अपने वली की इजाज़त के बग़ैर निकाह़ करे उसका निकाह़ बात़िल है।"

तमाम मुह़द्देसीन ने यहाँ मौला का मफ़्हूम 'औला बेहा' और 'अल मालिको ले अम्रेहा'

"उसका सरपरस्त और उसके उमूर का ह़ाकिम" बयान किया है।

बुख़ारी और मुस्लिम ने अपनी स़ह़ीह़ में रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से येह रवायत नक़्ल की है:

اِنَّ عَلَى الْاَرْضِ مِنْ مُؤْمِنٍ اِلَّا اَنَا اَوْلٰى النَّاسِ بِهٖ فَاَيُّكُمْ مَا تَرَكَ دَيْنًا اَوْ ضِيَاعًا فَاَنَا مَوْلَاهُ.

इन्ना अ़लल अर्ज़े मिन मोअ्मेनिन इल्ला अना औलन्नासे बेही फ़अय्योकुम मा त-र-क दैनन औ ज़ेयाअ़न फ़ अना मौलाहो।

"मैं रूए ज़मीन के तमाम मोअ्मिन पर औला बित्तस़र्रुफ़ हूँ और अगर कोई फ़ुरसत या जाएदाद छोड़े तो मैं उसका ज़्यादा ह़क़दार हूँ।"

इस रवायत में भी बहुत ही वाज़ेह अंदाज़ में मौला के मअ्ना औला लिया गया है। जिस पर ह़दीस का इब्तेदाई जुम्ला 'औलन्नासे बेही' गवाह है येह बात क्यों कर मुम्किन है कि दूसरी ह़दीसों में तो मौला का मफ़्हूम औला, मालिक और स़ाहेबे एख़्तेयार के हो मगर स़िर्फ़ ह़दीसे ग़दीर ही में इस मअ्ना में इस्तेअ्माल न हो सकता हो। क्या येह इम्तेयाज़ी बर्ताव तअ़स्सुब और जेहालत की बेना पर नहीं है!

(५) अ़रबी अश्आ़र में भी मौला औला के मअ्ना में इस्तेअ्माल हुआ है। 'मोअ़ल्लेक़ाते ख़म्स' में लबीद का शेअ्र इस सिलसिले में काफ़ी मशहूर है और उ़लमाए लुग़त ने अक्सर इससे इस्तेफ़ादा किया है। और जब क़दीम ज़मानों से येह लफ़्ज़, औला के मअ़्ना में इस्तेअ्माल हो रहा है तो येह किस त़रह़ से येह जाहिल और मुतअ़स्सिब अफ़राद दअ़्वा करते हैं कि येह लफ़्ज़ औला के मअ़्ना में इस्तेअ्माल ही नहीं हुआ है और *मन कुन्तो मौलाहो फ़अ़लीयुन मौलाहो* का मत़लब ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत नहीं है।

तारीख़ी दलीलें

ऐसे मुतअ़द्दिद तारीख़ी वाक़ेआत हैं जो इस हक़ीक़त पर गवाह हैं कि *'मन कुन्तो मौलाहो फ़अलीयुन मौलाहो'* का मतलब हाकिम, सरपरस्त, रहनुमा, औला बेनफ़्स है। ज़ैल में चंद वाक़ेआत का तज़्केरा करते हैं।

(६) जब हज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने इस एबारत के ज़रीए हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की इमामत-ओ-ख़ेलाफ़त का तआरुफ़ कराया, इस्लाम के मशहूर-ओ-मअ़्रूफ़ शाएर हस्सान बिन साबित अंसारी ने रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से इजाज़त लेकर इस मौक़ेअ़् पर चंद अश्आ़र लिखे और उन अश्आ़र पर मौला का मफ़्हूम इमाम, रहबर और हादी क़रार दिया है।

فَقَالَ لَهُ قُمْ يَا عَلِيُّ فَإِنِّي رَضِيتُكَ مِنْ بَعْدِي إِمَامًا وَهَادِيًا

फ़क़ा-ल लहू कुम या अ़ली फ़इन्ननी रज़ीतो-क मिन बअ़्दी इमामन व हदियन

"और फिर रसूले ख़ुदा ने उनसे कहा कि ऐ अ़ली खड़े हो बेशक मैं अपने बअ़्द तुम्हारी इमामत-ओ-हेदायत से राज़ी हूँ।"

इससे पता चलता है कि मौलाहो से रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने इमाम-ओ-हादी मुराद लिया है और इस मशहूर-ओ-मअ़्रूफ़ जुम्ले से हज़रत अ़ली की इमामत-ओ-रहबरी का एअ़्लान किया है। इन अश्आ़र को अह्ले सुन्नत के मशहूर-ओ-मअ़्रूफ़ उ़लमा ने नक़्ल किया है।

(७) जब मुआविया ने मौलाए काएनात के नाम अपने एक ख़त में अपने फ़ज़ाएल-ओ-मनाक़िब का तज़्केरा किया, हज़रत ने उसके जवाब में तहरीर फ़रमाया:

"क्या हिंद जिगर ख़ोर का बेटा अपनी बड़ाई जता रहा है।"

उस वक़्त फ़ौरन चंद अश्आर कह कर अपने कातिब को हुक्म दिया इसको मुआविया के जवाब में इर्साल कर दो। उन अश्आर में एक शेअ्र येह भी था:

فَاَوْجَبَ لِیْ وِلَایَتَہٗ عَلَیْکُمْ

फ़औ-ज-ब ली वेलायतेही अ़लैकुम

رَسُوْلُ اللّٰہِ یَوْمَ غَدِیْرِ خُمٍّ

रसूलुल्लाहे यौ-म ग़दीरे ख़ुम

"ग़दीरे ख़ुम के दिन रसूले ख़ुदा ने मेरी वेलायत तुम लोगों पर वाजिब की है।"

इन अश्आर को अह्ले सुन्नत के २६ मोअ्तबर उ़लमा ने अपनी किताबों में नक़्ल किया जिसकी बेना पर इन अश्आर की स़ेहत के बारे में कोई शुब्हा नहीं है। क्या इस सिलसिले में उस ज़ात की गवाही काफ़ी नहीं है जो बाबे मदीनतुल इल्म है और ह़क़ जिसके साथ साथ है।

(८) तारीख़े इस्लाम में ऐसे वाक़ेआत मौजूद हैं कि जहाँ इस ह़दीस से ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-रहबरी पर इस्तेदलाल

किया गया है और त़रफ़े मुक़ाबिल (जो ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के दुश्मनों में होता) ने कभी इस इस्तेदलाल पर ए़अ्तराज़ नहीं किया।

जंगे सि़फ़्फ़ीन के मौक़ेअ् पर क़ैस बिन सईद ने येह अश्आ़र पढ़े:

وَعَلِيٌّ اِمَامُنَا وَاِمَامُ نِسْوَانَا اَتٰى بِهِ التَّنْزِيْل

व अ़लीयुन इमामोना व इमामो निस्वाना अता बेहित्तन्ज़ील

يَوْمَ قَالَ نَبِيٌّ مَنْ كُنْتُ مَوْلَا فَهٰذَا مَوْلَاهُ خَطْبٌ جَلِيْلٌ

यौ-म क़ालन्नबीयो मन कुन्तो मौला फ़हाज़ा मौलाहो ख़-त-ब जलील

आपने मुलाहेज़ा फ़रमाया कि क़ैस बिन सईद जैसे स़हाबिए रसूल ने भी ह़दीसे ग़दीर का मत़लब ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-ख़ेलाफ़त के अ़लावा और कुछ नहीं लिया।

(९) जब मुआ़विया ने ख़ानदाने बनी उमय्या के क़दीमी वफ़ादार अ़म्र बिन आ़स़ को मिस्र का गवर्नर मुअ़य्यन किया, अ़म्र आ़स ने मुआ़विया को मिस्र का ख़ेराज इरसाल नहीं किया। मुआ़विया ने अ़म्र बिन आ़स़ को ख़त लिखा कि फ़ौरन मिस्र का ख़ेराज रवाना करो। अ़म्र आ़स़ को इस त़रह़ के ख़त़ की तवक़्क़ोअ् न थी। उसने उसके जवाब में येह अश्आ़र मुआ़विया को रवाना कर दिए और उसमें इस बात की वज़ाह़त की कि उसकी ह़ुकूमत क़ाएम करने के सिलसिले में उसने क्या कारनामा अंजाम दिया है और किस क़द्र ज़हमत बर्दाश्त की है। जबकि वोह (मुआ़विया) ख़लीफ़ा बरह़क़ नहीं था। अगर ह़क़ की बात है तो ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की ख़ेलाफ़त

बरहक़ है। येह अश्आर इसका सबब हुए कि फिर उसके बअ्द मुआविया ने अम्र आस से कोई तआरुज़ नहीं किया। क्या अम्र आस की तस्रीह और मुआविया का सुकूत इस बात की दलील नहीं है कि हदीसे ग़दीर का मफ़्हूम हज़रत अली की वेलायत-ओ-ख़ेलाफ़त है? और क्या पैरवाने मुआविया (अह्ले सुन्नत) के लिए येह दलील काफ़ी नहीं है।

उनमें से बअ्ज़ अश्आर है:

وَ كَمْ قَدْ سَمِعْنَا مِنَ الْمُصْطَفٰى

व कम क़द समेअ्ना मिनल मुस्तफ़ा

وَصَايَا مُخَصَّصَةً فِي عَلِيٍّ

वसाया मोख़स्सस़तन फ़ी अलीयिन

और हमने रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम **से हज़रत अली** अलैहिस्सलाम **के बारे में कितनी ख़ास ख़ास बातें सुनी हैं।**

وَفِي يَوْمِ خُمٍّ رَقِيْ مِنْبَرًا

व फ़ी यौमे ख़ुम्मे रक़ी मिम्बरन

وَبَلَّغَ وَالصُّحُفَ لَمْ تَرْحَلْ

व ब-ल-ग़ वस्सोहो-फ़ लम तर-हल

और ग़दीरे ख़ुम के दिन वोह मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और पैग़ाम पहुँचाया

فَامْنَحُهُ اِمْرَةَ الْمُؤْمِنِيْنَ

फ़म्नहोहू इम्रतल मोअ्मेनीन

مِنَ اللهِ مُسْتَخْلَفِ الْمُنْحَلْ

मिनल्लाहे मुस्तख़्लफ़िल मुनहल

ख़ुदा वन्द आलम के हुक्म से उन (अली) को मोअ्मेनीन को इमारत अता की।

وَفِيْ كَفِّهِ كَفِّهِ مَعَلَنَا

व फ़ी कफ़्ही कफ़्ही म-अ-लना

يُنَادِيْ بِاَمْرِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْ

युनादी बेअम्रिल अज़ीज़िल अली

उनका हाथ उनके हाथों में था और ख़ुदा के हुक्म से येह एअ्लान कर रहे थे

وَقَالَ فَمَنْ كُنْتُ مَوْلٰى لَهُ

व क़ा-ल फ़मन कुन्तो मौला लहू

عَلِيٌّ لَهُ الْيَوْمَ نِعْمَ الْوَلِيْ

अलीयुन लहुल यौ-म नेअ्मल वली

और फ़रमाया मैं जिसका मौला हूँ अ़ली भी उसके बेहतरीन वली है।

(१०) अ़म्र बिन आ़स़ का दोस्त, दरबारे मुआ़विया का शाएर, उमवी मिज़ाज मोहम्मद बिन अ़ब्दिल्लाह हुमैरी और दो शाएरों के साथ मुआ़विया के दरबार में था। उस वक़्त अ़म्र आ़स़ भी वहाँ मौजूद था। मुआ़विया बिन अबी सुफ़ियान ने वहाँ मौजूद शोअ़रा से कहा अ़ली के बारे में कुछ बात करो और हाँ देखो ह़क़ के अ़लावा और कुछ न कहना। (मेरे इन्आ़मात की लालच मे अ़ली की मुख़ालेफ़त में बात न करना) हुमैरी के साथ शाएरों ने नामुनासिब अश्आ़र पढ़े उस पर मुआ़विया ने उनकी मज़म्मत की। (उनके अश्आ़र किस क़द्र ह़क़ से दूर थे कि मुआ़विया ने भी मज़म्मत की)। और जब हुमैरी की बारी आई और उसने देखा कि कम अज़ कम उस वक़्त मुआ़विया और अम्र आ़स़ की त़रफ़ से कोई ख़ास़ ख़तरा नहीं है बल्कि कुछ इन्आ़म की भी उम्मीद है उसने अश्आ़र के दरमियान येह शेअ़्र पढ़ा।

تَنَاسُوْا نَصْبِهٖ فِيْ يَوْمِ خُمٍّ۔

तनासू नस़्बेही फ़ी यौमे ख़ुम

مِنَ الْبَارِيْ وَمِنْ خَيْرِ الْاَنَامِ

मिनल बारी व मिन ख़ैरिल अनाम

"ख़ुदा और रसूल की जानिब से ख़ुम के दिन अ़ली के मन्सूब ब-इमामत होने को लोगों ने भुला दिया।"

इससे पता चलता है कि इब्तेदाई और क़दीम अह्ले सुन्नत भी अ़ली की इमामत और रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की जानिब से ग़दीरे ख़ुम के दिन मन्सूब ब-इमामत होने के मोअ़्तरिफ़ थे। वोह ह़ज़रात जो अपने को सलफ़ का पैरव कहते हैं और अपने को "सलफ़िया" कहते हैं क्या उनके लिए मुआविया या अ़म्र आस़ जैसे सलफ़ की पैरवी ज़रूरी नहीं है?

(११) ग़दीरे ख़ुम के दिन रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने जो ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया था उसको इस्लाम के अक्सर शाएर ने नज़्म किया है। अ़ल्लामा अमीनी अ़लैहिर्रह्मा ने अपनी गराँक़द्र किताब "अल-ग़दीर" में मोअ़्तबर अस्नाद-ओ-मदारिक के साथ ९५ क़स़ाएद नक़्ल किए हैं। उन तमाम क़स़ाएद में ग़दीरे ख़ुम के दिन ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की ख़ेलाफ़त और इमामत की तस़्रीह की गई है।

जब हर दौर में शोअ़्रा और अरबाबे अदब ने अपने अश्आ़र में *"मन कुन्तो मौलाहो फ़अ़लीयुन मौलाहो"* का मत़लब ख़ेलाफ़त, इमामत, औलवीयत ..... लिया है और इसी को नज़्म किया है। अब अगर कोई इस रोशन ह़क़ीक़त से इंकार करे तो उसको अंधा तअ़स़्सुब कज फ़िक्री और बद सलीक़गी के अ़लावा और क्या कहा जा सकता है? अगर कोई दिन की रौशनी में ज़ोअ़्फ़े बस़ारत की बेना पर सूरज न देख सके और उस को रात की तारीकी ही पसंद हो तो उस का क्या ए़लाज है?

(१२) ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने जनाब उ़मर के मुअय्यन करदह शूरा के मज्मेअ़् में उ़स्मान, अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़, सअ़्द वक़्क़ास, ज़ुबैर

और त़लहा के सामने जब अपने फ़ज़ाएल का ज़िक्र किया, उसमें ह़दीसे ग़दीर का भी तज़्केरा किया और फ़रमाया:

فَاَنْشُدُكُمْ بِاللّٰهِ هَلْ فِيكُمْ اَحَدٌ قَالَ لَهُ رَسُولُ اللّٰهِ (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ): مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ، اَللّٰهُمَّ وَالِ مَنْ وَالَاهُ، وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ وَانْصُرْ مَنْ نَصَرَهُ لِيُبَلِّغُ الشَّاهِدَ الْغَائِبَ غَيْرِى؟ قَالُوا اَللّٰهُمَّ لَا..

फ़न्शुदोकुम बिल्लाहे हल फ़ीकुम अ-ह़-दुन क़ा-ल लहू रसूलुल्लाहे स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **मन कुन्तो मौलाहो फ़अ़लीयुन मौलाहो अल्लाहुम्मा वाले मन वालाहो व अ़दे मन अ़दाहो वन्सुर मन न-स़-रहू लेयुबल्लेगुश्शाहेदल्ग़ाए-ब ग़ैरी? क़ालू अल्लाहुम्मा ला..**

"मैं तुम लोगों को ख़ुदा की क़सम देकर सवाल करता हूँ तुम में से मेरे अ़लावा और कोई है जिसके बारे मे रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **ने फ़रमाया हो, मैं जिसका मौला हूँ उसके अ़ली मौला हैं। ख़ुदाया इसके दोस्तों को दोस्त, इसके दुश्मनों को दुश्मन रख और इसकी मदद करने वालों की मदद कर।"**

सब ने कहा: ख़ुदा गवाह है आपके अ़लावा और कोई नहीं है। यअ़्नी उस पूरे मज्मेअ़् ने जो ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करने के लिए इकट्ठा हुआ था उसने एअ़्तेराफ़ किया कि ग़दीरे ख़ुम के मौक़ेअ़् पर रसूले ख़ुदा ने ह़ज़रत अ़ली को ख़ेलाफ़त-ओ-इमामत के लिए मन्स़ूब किया। वहाँ मौजूद किसी एक ने

भी येह तावील नहीं की कि इस ह़दीस में मौला से मुराद दोस्त है, वली और ह़ाकिम नहीं है। नहीं मअ्लूम अ़स्रे जदीद के उ़लमा येह दूर की कौड़ी कहाँ से लाए है?

(१३) ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने ख़ेलाफ़ते उ़स्मान और जंगे जमल के दौरान भी इस ह़दीस से इस्तेदलाल किया है बल्कि इस त़रह़ की बह़्सों में, अ़म्मारे यासिर, अबू हुरैरा, दूसी, अबू अय्यूब अन्स़ारी, ख़ुज़ैमा बिन साबित ज़ुश्शहादतैन, क़ैस बिन साबित..... जैसे रसूले ख़ुदा के बुज़ुर्ग़ स़ह़ाबा मौजूद थे। उन में किसी एक ने भी एअ्तराज़ नहीं किया बल्कि हर एक ने ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की ताईद की।

इस त़रह़ की बह़्सें और मुनाज़ेरे ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के अ़लावा ह़ज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम, अ़ब्दुल्लाह बिन जअ़्फ़र, अस़्बग़ बिन नुबाता, उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ और मामून वग़ैरह ने भी अंजाम दिए हैं। और कभी भी मुक़ाबिल वालों ने इस इस्तेदलाल पर कोई ए़तेअ़्राज़ नहीं किया है और लफ़्ज़े मौला के मअ़्ना में कोई बह़्स या तावील नहीं की है। इससे पता चलता है कि इस त़रह़ की तावीलें बअ़्दे दौर के शयात़ीन की ईजाद हैं।

(तफ़स़ीलात के लिए अल-ग़दीर, जि. १, स़. १२२-१५९, रुजूअ़् फ़रमाएँ।)

(१४) वाक़ेअए ग़दीर के २५ साल बअ़्द यअ़्नी ३५ हिजरी में जब काफ़ी लोग इंतेक़ाल कर चुके थे या शहादत पा चुके थे कुछ लोग दूसरे शहरों की जानिब हिजरत कर चुके थे और इधर उधर मुतफ़र्रिक़ हो गए थे। जबकि बअ़्ज़ दूसरे ह़क़ फ़रोख़्त कर चुके थे। बअ़्ज़ दुश्मन के ख़ौफ़ से तक़य्ये में थे इसी के साथ साथ दुश्मनाने अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम फ़ज़ाएले अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को मिटाने और दूसरों

के फ़ज़ाएल गढ़ने, बनाने में मशग़ूल थे ऐसी सूरत में बात कुछ यहाँ तक पहुँच गई थी कि वोह अफ़राद जो वाक़ेअ्ए ग़दीर में शरीक नहीं थे या जिनके पास कोई इल्म नहीं था और ईमान भी कोई मज़बूत नहीं था। येह लोग वाक़ेअ्ए ग़दीर के बारे में फ़िक्र करने लगे। इस मौक़ेअ् पर हज़रत अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम ने कूफ़ा में मौजूद अस्हाब और ताबईन को जमअ् किया और एक ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया और वहाँ मौजूद लोगों से दरियाफ़्त फ़रमाया कि सिर्फ़ वोह अफ़राद वाक़अ्ए ग़दीर की गवाही दें जो उस वक़्त मौजूद थे और जिन्होंने ख़ुद रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की ज़बानी हदीसे ग़दीर सुनी है। तक़रीबन तीस (३०) अफ़राद मज्मेअ् में खड़े हुए और उन्होंने गवाही दी कि हमने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

اَلَسْتُ اَوْلٰی بِکُمْ مِنْ اَنْفُسِکُمْ قُلْنَا بَلٰی یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ. فَقَالَ مَنْ کُنْتُ مَوْلَاہُ فَعَلِیٌّ مَوْلَاہُ...

अलस्तो औला बेकुम मिन अन्फ़ोसेकुम कुल्ना बला या रसूलल्लाह। फ़क़ा-ल मन कुन्तो मौलाहो फ़अलीयुन मौलाहो...

जो लोग वहाँ मौजूद थे उन में से बअ्ज़ के नाम येह है: अबू अय्यूब अन्सारी, अबू ज़ैनब बिन औफ़, सह्ल बिन हनीफ़, अब्दुर्रह्मान बिन अब्दुर्रब, अबू हुरैरा, नोअ्मान बिन अजलान, ख़ुज़ैमा बिन साबित (ज़ुश्शहादतैन) अब्दुल्लाह बिन साबित (रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही

व सल्लम के ख़ादिम), हबशी बिन जेनान, उ़बैद बिन आ़ज़िब, साबित बिन दरमिया..... उस मज्मेअ् में ज़ैद बिन अरक़म भी मौजूद थे उन्होंने ग़वाही नहीं दी। मौलाए काएनात ने उन पर लअ्नत की और वोह दोनों आँखों से अंधे हो गए।

इस वाक़ए को ४ स़हाबा और २४ ताबेईन ने नक़्ल किया है और अह्ले सुन्नत के इन मोअ्तबर उ़लमा ने अपनी किताबों मे इसको दर्ज किया है। नेसाई ने ख़स़ाएस़ में, इब्ने कसीर ने अल कामिल ५/२११ में, इब्ने असीर ने असदुल ग़ाबा ४/२८ में, इमाम अह्मद हम्बल ने मुस्नद ४/३७० में.....

आया येह वाक़ेआ जो यौमुल रह्बत के नाम से मशहूर है उन अफ़राद के लिए काफ़ी नहीं है जो स़हाबए केराम की मोहब्बत और पैरवी का दम भरते हैं?

(१५) अह्ले सुन्नत के अ़ज़ीम मुफ़स्सिर ज़म्हशरी ने रबीउ़ल अबरार में येह वाक़ेआ दर्ज किया है कि मुआविया एक साल ह्ज करने गया वहाँ उसने सियाह मगर बहादुर और दिलेर औ़रत अकरमा को बुलाया और उससे कहा मैंने तुमको येह दरियाफ़्त करने के लिए बुलाया है कि तुम अ़ली को क्यों दोस्त रखती हो और मुझे क्यों दुश्मन? औ़रत ने कहा - अगर जवाब दूँ तो क्या अमान में रहूँगी। मुआविया ने कहा 'हाँ'। औ़रत ने दलील पेश करते हुए कहा: मैं अ़ली को इसलिए दोस्त रखती हूँ कि ग़दीरे ख़ुम के दिन जहाँ तुम भी मौजूद थे, रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ह्ज़रत अ़ली की वेलायत का एअ्लान किया (न कि तुम्हारी) और इसलिए दोस्त रखती हूँ कि अ़ली अ़लैहिस्सलाम मिस्कीनों को दोस्त रखते हैं और

दीनदारों का एह्तेराम करते हैं और तुम लोगों का खून बहाते हो और तफ़रक़ा ईजाद करते हो। क़ज़ावत में ज़ुल्म करते हो।

जब ग़दीर का एअ्लान परदे में रहने वाली और घर की चार दीवारी में महदूद औरतों से पोशीदा न रह सका और बात इस क़द्र आम हुई कि औरतें इससे इस्तेदलाल करने लगी और मुक़ाबिल को ला जवाब करने लगीं, तअज्जुब है कि उलमाए अह्ले सुन्नत से येह वाक़ेआ क्यों कर पोशीदा रह गया?

(१६) रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के ख़ुत्बे से पहले येह आयत नाज़िल हुई:

يَاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ط وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ط وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ

या अय्योहर्रसूलो बल्लिग़ मा उन्ज़े-ल इलै-क मिर्रब्बे-क, व इल्लम तफ़्अ़ल फ़मा बल्लग़्-त रेसालतहू, वल्लाहो यअ़्सेमो-क मिनन्नासे।

"ऐ रसूल जो आप पर नाज़िल किया गया है उसको पहुँचा दीजिए, अगर आप ने न पहुँचाया तो आप ने रेसालत का काम अंजाम ही नहीं दिया और अल्लाह आप को लोगों से महफ़ूज़ रखेगा।"

(सूरए माएदा (५), आयत ६७)

क्या इस एह्तेमाम का मत़लब येह था कि रसूले ख़ुदा बस ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की दोस्ती का एअ्लान करें। और अ़ली की दोस्ती के एअ्लान

में कौन सा ख़तरा था जिससे हेफ़ाज़त की बात की जा रही है? एअ्लान के लिए जो एह्तेमाम और इंतेज़ाम किया गया है, इससे साफ़ ज़ाहिर है कि हज़रत अ़ली की वेलायत-ओ-ख़ेलाफ़त का एअ्लान है जिसका न पहुँचाना कारे रेसालत अंजाम न देने के मुतरादिफ़ है।

(१७) ख़ुत्बा मुकम्मल होने के बअ्द आयते इकमाल:

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ
وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا

अल यौ-म अकमल्तो लकुम दी-नकुम व अत्मम्तो अ़लैकुम नेअ़्मती व रज़ीतो लकुमुल इस्ला-म दीनन

"आज (अ़ली की वेलायत के एअ़्लान से) दीन कामिल हो गया। नेअ़्मतें तमाम हो गईं और ख़ुदा इस दीन से राज़ी-ओ-ख़ुशनूद हो गया।"

(सूरए माएदा (५), आयत ३)

जिसके रहनुमा और पेशवा हज़रत अ़ली हैं। अगर ग़दीर में अ़ली की वेलायत-ओ-ख़ेलाफ़त का एअ्लान न था तो इस आयत को किस तरह बयान करेंगे क्योंकि हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की मोहब्बत का एअ्लान तो इससे पहले बार बार कर चुके थे। ग़दीर के दिन किस चीज़ का एअ्लान हुआ जिससे नेअ़मतें मुकम्मल हो गईं और ख़ुदा राज़ी हो गया। हज़रत की वेलायत के अ़लावा और क्या चीज़ हो सकती है। इस आयत की शाने नुज़ूल मअ़्लूम करने के लिए इस आयत से मुतअ़ल्लिक़ तफ़सीरें मुलाहेज़ा हों।

(१८) जब रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ग़दीरे ख़ुम में ख़ुदा के हुक्म से मौला और ह़ाकिम मुअ़य्यन कर चुके और येह बात हर त़रफ़ फैल गई। ह़ारिस बिन नोअ़्मान फ़हरी रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और कहने लगा आप ने शहादतैन (तौह़ीद और रेसालत) की गवाही चाही हमने दी। आपने नमाज़, ज़कात और ह़ज़ वाजिब किया हमने क़बूल कर लिया। लेकिन आप इस पर राज़ी न हुए अब आपने अपने चचाज़ाद भाई को हमारा हाकिम मुअ़य्यन कर लिया और फ़रमा दिया:

"जिसका मैं रहबर हूँ उसके अ़ली रहबर हैं।"

आया येह एअ़्लान आपकी जानिब से है या ख़ुदा की त़रफ़ से। रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया:

"उस ख़ुदा की क़सम जिसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है येह ख़ुदा का हुक्म है।"

येह सुनकर ह़ारिस उठ खड़ा हुआ और येह कहता हुआ अपने ऊँट की जानिब चला: ख़ुदाया अगर येह हुक्म तेरी जानिब से है तो मुझ पर पत्थर या अ़ज़ाब नाज़िल कर। अभी वोह अपने ऊँट तक नहीं पहुँचा था कि आसमान से एक पत्थर उस पर गिरा और वोह वहीं हलाक हो गया। फिर येह आयत नाज़िल हुई:

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۙ﴿۱﴾

स-अ-ल साएलुन बेअ़ज़ाबिन वाक़ेइन

(सूरए मआ़रिज (७०), आयत १)

ह़ारिस का सवाल ख़ुद बता रहा है कि ग़दीर में रसूले ख़ुदा ने ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत और रहबरी का एअ्लान फ़रमाया है। और जो कोई ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-रहबरी का इंकार कर रहे हैं और वाक़ेअए ग़दीर की मनमानी तौजीह कर रहे हैं वो ह़ारिस के वाक़ेआ से स़बक़ लें। कहीं उन पर भी अ़ज़ाब नाज़िल न हो गरचे उनकी अ़क़्लों पर पहले ही से पत्थर पड़े हुए हैं।

(१९) जब रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-रहबरी का एअ्लान फ़रमा चुके आपने अंसार-ओ-मुहाजेरीन से फ़रमाया: जाओ और ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम से कहो -

"ऐ अ़ली अ़लैहिस्सलाम हम आपसे अ़ह्द करते हैं और ज़बान से मुआ़हेदा करते हैं और हाथों से बैअ़त करते हैं कि इस बात को अपनी औलाद तक पहुँचाएंगे और इस अ़ह्द में रद्द-ओ-बदल नहीं करेंगे। आप हम पर गवाह हैं और ख़ुदा गवाही के लिए काफ़ी है।"

और अ़ली को "अमीरुल मोअ्मेनीन" कह कर सलाम करो और उसके बअ़्द कहो:

"ह़म्द है उस ख़ुदा की जिसने हमें उसकी त़रफ़ हेदायत की और अगर वोह हेदायत न करता तो हम हरगिज़ हेदायत याफ़्ता न होते।"

क्या इन तमाम बातों से ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-रहबरी समझ में नहीं आती?

(२०) अबू बक्र और उ़मर उन अफ़राद में शामिल हैं जिन्होनें रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम का पैग़ाम सुनने के बअ़्द सबसे पहले ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के हाथों पर बैअ़त की। उनके बअ़्द बक़ीया अन्स़ार-ओ-मुहाजेरीन ने बैअ़त की। उन लोगों ने बैअ़त करते वक़्त ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को येह कहकर मुबारकबादी दी "मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो या अ़ली आप हमारे मौला हो गए"।

तअ़ज्जुब है कि ह़ज़रत अबू बक्र-ओ-उ़मर तो इस ह़दीस से वेलायत और ख़ेलाफ़त समझें और उनके जाँनिसार और मोह़ब्बत का दम भरने वाले राज़ी, देह्लवी, नदवी, नोअ़्मानी.....वग़ैरह कुछ और मत़लब निकालें। नहीं मअ़्लूम येह लोग किसके पैरवकार हैं।

(२१) ह़ज़रत रसूले अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ग़दीर के दिन ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत के एअ़्लान के बअ़्द अपना अ़मामए मुबारक 'सह़ाब' अपने सरे अत़हर से उतार कर ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के सरे अक़दस पर रखा और इस त़रह़ उनको ताजे वेलायत-ओ-इमामत एनायत फ़रमाया और उसके बअ़्द फिर येह जुम्ला इर्शाद फ़रमाया - *"मन कुन्तो मौलाहो फ़अ़लीयुन मौलाहो"।* येह वाकेआ अह्ले सुन्नत के इन अ़ज़ीम उ़लमा ने दर्ज किया है:

१. शहाबुद्दीन ने तौज़ीहुद्दलाएल में

२. जमालुद्दीन शीराज़ी ने अरबईन में।

३. ज़रन्दी ने नज़्मे दुररुस्सिम्त़ैन में।

क्या येह ताज पोशी वेलायत और रहबरी-ओ-ख़ेलाफ़त की दलील नहीं है। उ़लमाए अह्ले सुन्नत इन तमाम दलीलों के होते हुए फिर क्यों ह़क़ क़बूल नहीं करते हैं और ख़ाह मख़ाह की तावीलात में क्यों वक़्त ज़ाएअ् करते हैं।

दूसरी दलीलें

अगर किसी ए़बारत को उसके सियाक़-ओ-सबाक़ से अलग करके समझा जाए और इस जुम्ले को पूरी ए़बारत से जुदा करके बह्स का मौज़ूअ् बनाया जाए तो इस बात का क़वी इम्कान है कि बात कुछ की कुछ हो जाए और अस़्ल मत़लब तह्रीफ़ का शिकार हो जाए इसलिए ज़रूरी है कि जुम्ले के मअ्ना-ओ-तफ़सीर बयान करते वक़्त पूरी ए़बारत को पेशे नज़र रखा जाए और इसी के साथ साथ वक़्त और ह़ालात को भी मद्दे नज़र रखा जाए तब सह़ीह़ मफ़्हूम वाज़ेह़ होगा और पूरी बात समझ में आएगी। जुम्ला *मन कुन्तो मौलाहो फ़अ़लीयुन मौलाहो* भी इस त़रह़ का एक जुम्ला है। इस जुम्ले में मौला के मअ्ना समझने के लिए ज़रूरी है कि हम रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के पूरे ख़ुत़्बे को मद्दे नज़र रखें। इससे क़ब्ल और बअ्द के जुम्लों को ज़ेह्न में रखें और दूसरे क़राएन को साथ साथ रखें तब इसके हक़ीक़ी मअ्ना वाज़ेह होंगे वरना ह़क़ीक़त वाज़ेह न होगी।

(२२) रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने येह जुम्ला इर्शाद फ़रमाने से पहले लोगों से इस त़रह़ सवाल फ़रमाया था:

اَلَسْتُ اَوْلٰى بِكُمْ مِنْ اَنْفُسِكُمْ

अलस्तो औला बेकुम मिन अन्फ़ोसेकुम

"क्या मैं तुम पर ख़ुद तुमसे ज़्यादा एख़्तेयार नहीं रखता हूँ?"

सब ने कहा "यक़ीनन आपको हम सबसे ज़्यादा एख़्तेयार ह़ासिल है।" इसके बअ़्द रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने येह जुम्ला इर्शाद फ़रमाया :

مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ

मन कुन्तो मौलाहो फ़अ़लीयुन मौलाहो

जिस पर मुझे सबसे ज़्यादा एख़्तेयारात ह़ासिल हैं उस पर अ़ली को भी सबसे ज़्यादा एख़्तेयारात ह़ासिल हैं।

इस इब्तेदाई जुम्ला *अलस्तो औला बेकुम,* को अह्ले सुन्नत के ६४ मुह़द्देसीन जैसे अह़मद बिन हम्बल, इब्ने माजा, नेसाई, तिरमिज़ी, त़बरी, ह़ाकिम नेशापूरी, इब्ने कसीर, सुयूती..... ने नक़्ल किया है। क्या येह पहला जुम्ला दूसरे जुम्ले की वज़ाहत नहीं कर रहा है?

(२३) रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने अपने ख़ुत़्बे की इब्तेदा में इर्शाद फ़रमाया:

كَأَنِّي دُعِيتُ فَأَجَبْتُ

कअन्नी दोईतो फ़अजब्तो

"मुझे (मौत की) दअ़्वत दी गई है और मैने क़बूल कर लिया है।"

येह जुम्ला बता रहा हैं कि अब ज़िंदगी के बहुत ज़्यादा दिन बाक़ी नहीं रह गए हैं। और पैग़म्बर अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम अपने बअ़्द अपने जानशीन का एअ़्लान करने वाले हैं। ह़ज़रत अबू बक्र और उ़मर ने ऐसा ही किया था। दोनों ने अपनी ज़िंदगी के आख़री लम्ह़ात में या अपना जानशीन मुअ़य्यन किया या उसका त़रीक़एकार मुअ़य्यन किया। क्या येह सारे क़रीने इस बात के लिए काफ़ी नहीं हैं कि जुम्ला *मन कुन्तो मौलाहो.....* ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-इमामत से मुतअ़ल्लिक़ है और इसमें किसी शुब्हे की गुंजाइश नहीं है।

(२४) रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ख़ुत़्बा तमाम करने के बअ़्द इर्शाद फ़रमाया :

فَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ

फ़लयुबल्लेग़िश्शाहेदल ग़ाए-ब

"मौजूद अफ़राद उन तक येह ख़बर पहुचाएँ जो यहाँ मौजूद नहीं हैं।"

अगर रोज़े ग़दीर का तमाम प्रोग्राम, ख़ुत़्बा, एअ़्लाने वेलायत, बैअ़त, मुबारकबाद, ताजपोशी, जनाब ह़स्सान के अशआ़र, स़िर्फ़ इसलिए था कि "मैं जिसका दोस्त हूँ अ़ली भी उसके दोस्त हैं" येह कोई ऐसी बात नहीं है जिसके लिए इतना ज़्यादा इंतेज़ाम और एह्तेमाम किया जाए। क्योंकि अ़ली की दोस्ती पहले ही से बयान की जा चुकी है और ख़ुद क़ुरआन करीम का इर्शाद है:

اَلْمُؤْمِنُوْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ

अल-मोअ्मेनू-न बअ़्ज़ोहुम औलियाओ बअ़्ज़िन

"मोअ्मिन आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं"

इस एह्तेमाम और ताकीद से बात स़ाफ़ ज़ाहिर है की बात रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बअ़्द ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के जानशीन और ख़लीफ़ा होने की है।

(२५) ख़ुत्बा तमाम करने के बअ़्द ह़ज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ عَلٰى اِكْمَالِ الدِّيْنِ وَ اِتْمَامِ النِّعْمَةِ وَ رَضِىَ الرَّبِّ بِرِسَالَتِىْ وَ الْوِلَايَةِ لِعَلِيٍّ مِنْ بَعْدِىْ.

अल्लाहो अकबर अ़ला इक्मालिद्दीने व इत्मामिन्नेअ़्मते व रज़ेयर्रब्बे बेरेसालती वल वेलायते लेअ़लीयिन मिन बअ़्दी

"ख़ुदा बुज़ुर्ग-ओ-बरतर है। उसकी किब्रियाई है कि दीन कामिल हुआ, नेअ़्मतें तमाम हुईं और परवरदिगार मेरी रेसालत और मेरे बअ़्द अ़ली की वेलायत से राज़ी-ओ-ख़ुशनूद हो गया।"

येह एबारत तिरमिज़ी, नेसाई, ह़ाकिम नेशापूरी, अह़मद हम्बल, त़बरी और दीगर ह़ज़रात ने नक़्ल की है। लफ़्ज़े रेसालत और वेलायत स़ाफ़ स़ाफ़ बता रहा है कि अ़ली की दोस्ती नहीं बल्कि वेलायत-ओ-रहबरी मुराद है।

(२६) रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ख़ुत्बा तमाम करने के बअ़्द फ़रमाया :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ شَهِيْدٌ عَلَيْهِمْ اِنِّيْ قَدْ بَلَغْتُ وَ نَصَحْتُ.

अल्लाहुम्मा अन्ता शहीदुन अ़लैहिम अन्नी क़द बलग़्तो व नस़ह़्तो

"ख़ुदाया! तू गवाह है कि मैंने बात पहुँचा दी और नस़ीह़त कर दी"

इससे वाज़ेह हो रहा है कि रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने जो बात बयान की है वोह नई बात है। जबकि ह़ज़रत अ़ली और अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की दोस्ती कोई नई बात नहीं है इसको तो रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने बार बार बयान फ़रमाया है।

(२७) ख़ुत़्बा तमाम होने, तमाम लोगों से बैअ़त लेने, और उस अ़ह्द-ओ-पैमान की ताकीद-ओ-तौसीक़ के साथ साथ जैसा कि मोह़म्मद बिन जरीर त़बरी ने किताब अल-वेलायत में ज़ैद बिन अरक़म से नक़्ल किया है कि आँहज़रत स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :

سَلِّمُوْا عَلِيًّا بِاِمْرَةِ الْمُؤْمِنِيْنَ.

सलमू अ़लीयन बे-इम्रतिल मोअ्मेनी-न।

"अ़ली को अमीरुल मोअ्मेनीन कहकर सलाम करो।"

सबको येह हुक्म देना कि अमीरुल मोअ्मेनीन कहकर सलाम करो इससे स़ाफ़ ज़ाहिर है कि बात ह़ज़रत अ़ली की वेलायत और रहबरी की है। वरना अगर बात मोह़ब्बत और दोस्ती की होती तो फ़रमाना चाहिए था कि "*मोह़िब्बुल मोअ्मेनीन*" कहकर सलाम करो। इस बात को अह्ले सुन्नत के

तमाम उ़लमा बख़ूबी जानते हैं कि अमीरुल मोअ्मेनीन के लक़ब में वेलायत-ओ-इमामत, रेयासत-ओ-क़यादत शामिल है। उन्होंने येह लक़ब हुक्मरानों के लिए इस्तेअ्माल किया है दोस्तों के लिए नहीं।

(२८) ह़ज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को मअ्लूम था कि ह़ज़रत अ़ली की ख़ेलाफ़त को हर एक तस्लीम नहीं करेगा। मुनाफ़ेक़ीन और ह़ासेदीन इसको दिल से क़बूल नहीं करेंगे। इसलिए रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने उनके ह़क़ में दुआ़ की कि जो ह़ज़रत अ़ली को दोस्त रखें और उन अफ़राद पर लअ्नत और नफ़रीन की जो उनको दुश्मन रखें। रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की येह दुआ़ और बददुआ़ अह्ले सुन्नत के अकसर मुह़द्देसीन और मुवर्रेख़ीन ने नक़्ल की है कि आँह़ज़रत स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ह़ज़रत अ़ली की इमामत-ओ-वेलायत के एअ्लान के बअ्द फ़रमाया :

اَللّٰهُمَّ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَعَادِ مَنْ عَادَاهُ وَانْصُرْ مَنْ نَصَرَهٗ وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَهٗ

अल्लाहुम्मा वाले मन वालाहो व अ़दे मन अ़दाहो वन्सुर मन न-स़-रहू वख़्ज़ुल मन ख़-ज़-लहू।

ताकि हर एक को मअ्लूम हो जाए कि अ़ली से दोस्ती रखना और उनके अह़काम की पैरवी करना रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की दुआ़ में शामिल होना और ह़ज़रत अ़ली की नाफ़रमानी और उनके अह़काम से सरकशी रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की लअ्नत का सबब है। रसूल की येह दुआ़ इस बात को भी वाज़ेह कर रही

है कि ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम मअ़्सूम है यअ़्नी अ़ली की दोस्ती किसी भी मरहले में गुनाहों की दअ़्वत नहीं दे सकती है। क्योंकि किसी की मुकम्मल पैरवी का हुक्म उसी वक़्त दिया जा सकता है जब वोह मअ़्सूम हो और किरदार हर त़रह़ की बुराइयों से पाक-ओ-स़ाफ़ हो। और जो भी अ़ली की मुख़ालेफ़त करेगा वोह रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की बद्दुआ और नफ़रीन में शामिल होगा।

(२९) अह्ले सुन्नत के बहुत से मुवर्रेख़ीन, मुह़द्देसीन और मुफ़स्सेरीन जैसे त़बरी वग़ैरह ने ज़ैद बिन अरक़म, ह़ुज़ैफ़ा असयद और आ़मिर बिन लैली से नक़्ल किया है कि रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया है।

يَا اَيُّهَا النَّاسُ بِهٖ تَشْهَدُوْنَ؟ قَالُوْا! نَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ قَالَ ثُمَّ مَه؟قَالُوْا! وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ قَالَ فَمَنْ وَلِيُّكُمْ؟ قَالُوْا! اَللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ مَوْلَانَا، ثُمَّ ضَرَبَ بِيَدِهٖ اِلٰى عَضُدِ عَلِىٍّ فَاَقَامَهٗ فَقَالَ: مَنْ يَّكُنِ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ مَوْلَاهُ فَاِنَّ هٰذَا مَوْلَاهُ.

या अय्योहन्नासो बेही तश-हदू-न? क़ालू! नश्हदो अन ला इला-ह इल्लल्लाहो क़ा-ल सुम्मा मह? क़ालू! व अन-न मोह़म्मदन अ़ब्दोहू व रसूलोहू क़ा-ल फ़मन वलीयोकुम? क़ालू! अल्लाहो व रसूलोहू मौलाना, सुम-म ज़-र-ब बेयदेही इला अ़ज़ोदे अ़ला फ़अक़ामहू फ़क़ा-

लः मय्यँकोनिल्लाहो व रसूलोहू मौलाहो फ़इन-न हाज़ा मौलाहो।

"रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **ने लोगों से दरियाफ़्त किया कि तुम लोग किस चीज़ की गवाही देते हो? सब ने कहाःख़ुदा की वह्दानियत और आप की रेसालत की। फिर रसूले ख़ुदा ने दरियाफ़्त फ़रमायाः तुम्हारा वली कौन है? सब ने कहा! ख़ुदा और उसका रसूल हमारा वली है। फिर रसूले ख़ुदा ने अ़ली को उठाया और फ़रमाया जिसका ख़ुदा और उसका रसूल वली है पस उसका येह अ़ली भी वली है।"**

अगर यहाँ भी तअ़स़्सुब और कज फ़िक्री की बेना पर मौला के मअ़्ना दोस्त के बताया जाए तो कितनी ग़ैर मुनासिब बात होगी। फिर इस तर्जुमा की बेना पर येह जुम्ला पहले जुम्लों से बिल्कुल बेरब्त हो जाएगा और बेरब्त बात करना ख़ुदा और रसूल से बईद है। इस बेना पर ज़रूरी है कि रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के कलाम का मत़लब येह लिया जाए कि ख़ुदा और रसूल जिसके वली हैं अ़ली उसके वली हैं और जो ख़ुदा और रसूल की वेलायत तस्लीम नहीं करता, उसको अ़ली से क्या सरोकार।

(३०) अगर ग़दीर के वक़्त और ह़ालात को नज़र में रखा जाए तब भी वली के अ़लावा कोई और मअ़्ना बयान करना सख़्त दुश्वार और ग़ैर मुनासिब है। रसूल की ह़ज से वापसी, दरमियाने सफ़र, खुला और बे आब-ओ-गयाह मैदान, दोपहर का वक़्त, ग़ज़ब की गर्मी, क़यामत की तमाज़त, आगे बढ़ जाने वालों को बुलाना, पीछे रह

जाने वालों का इंतेज़ार करना, नमाज़े ज़ोह्र-ओ-अ़स्र को मिलाकर पढ़ना, पालाने शुतुर से मिम्बर बनाना, ख़ुत्बा देना, अपनी मौत की ख़बर देना, अ़ली को अपने हाथों पर बलंद करना, जुम्ला तीन मर्तबा तकरार करना.....येह सारा एह्तेमाम इसलिए था कि रसूल फ़रमाएँ कि जिसका मैं दोस्त हूँ उसके अ़ली दोस्त हैं। क्या येह मज़्हका ख़ेज़ नहीं है। येह लागों के साथ मज़ाक नहीं है! वोह क्या वजह है कि अह्ले सुन्नत हर त़रह़ की बात और हर त़रह़ का एअ्तेराज़ बर्दाश्त करने के लिए तैयार हैं चाहे ख़ुदा और रसूल पर हर्फ़ आता हो मगर वोह मौला के मअ्ना वली मानने को तैयार नहीं हैं। इसके पीछे कौन सा राज़ है या वोह कौन सी उलझन है। ख़ुदा ही बेहतर जानता है।

(३१) येह बात नेहायत दर्ज़ा क़ाबिले अफ़सोस है कि ग़दीर के दिन रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने जो अ़ज़ीमुश्शान ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया था और जिसको एक लाख से ज़्यादा स़ह़ाबा ने सुना था लेकिन अक्सर मुह़द्देसीन और मुवर्रेख़ीन ने इस पूरे ख़ुत्बे को नक़्ल नहीं किया बल्कि हर एक ने इतना ही लिखा कि एक फ़स़ीह-ओ-बलीग़ ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया। सबसे ज़्यादा तफ़्स़ील के साथ अ़ज़ीम मुवर्रिख़ अबू जअ्फ़र मोह़म्मद बिन जरीर त़बरी ने ज़ैद बिन अरक़म से नक़्ल किया है। अगर इस ख़ुत्बा को ग़ौर से पढ़ा जाए और उसके हर जुम्ले पर तवज्जोह दी जाए तो मुन्स़िफ़ मिज़ाज और हक़ीक़त के मुतलाशी के लिए बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाएगी कि *मन कुन्तो मौलाहो.....*का मक़स़द वेलायत-ओ-रहबरी के अ़लावा कुछ और नहीं है। ख़ुत्बा के बअ्द जुम्ले इस त़रह़ हैं:

"ख़ुदा की जानिब से जिब्रईल मेरे पास आए हैं कि मैं इसी जगह ठहरूँ और हर गोरे काले के लिए येह वाज़ेह कर दूँ कि –

اِنَّ عَلِیَّ بْنَ اَبِیْ طَالِبٍ اَخِیْ وَصِیِّیْ وَ خَلِیْفَتِیْ وَالْاِمَامُ بَعْدِیْ.

इन्-न अ़लीयुब्नो अबी त़ालिबिन अख़ी वस़ीयी व ख़लीफ़ती वल इमामो बअ़्दी।

"कि यक़ीनन अ़ली इब्ने अबी त़ालिब मेरे भाई हैं मेरे वस़ी हैं और मेरे ख़लीफ़ा हैं और मेरे बअ़्द इमाम हैं।"

इसके बअ़्द फ़रमाया –

فَاِنَّ اللّٰهَ قَدْ نَصَبَهٗ لَكُمْ وَلِيًّا وَاِمَامًا وَ فَرَضَ طَاعَتَهٗ عَلٰى كُلُّ اَحَدٍ

फ़इन्नल्ला-ह क़द न-स़-ब-हू लकुम वलीयन व इमामन व फ़-र-ज़ त़ाअ़-तहू अ़ला कुल्ले अ़हद

"ख़ुदा ने उनको तुम्हारा वली और इमाम मुअ़य्यन किया है और उनकी इत़ाअ़त हर एक पर वाजिब की है।"

इसके बअ़्द इरशाद फ़रमाया:

فَاِنَّ اللّٰهَ مَوْلَا كُمْ وَ عَلِیٌّ اِمَامُكُمْ ثُمَّ اَنَّ الْاِمَامَةَ فِیْ وُلْدِیْ مِنْ صُلْبِهٖ اِلَى الْقِيَامَةِ

फ़इन्नल्ला-ह मौलाकुम व अ़लीयुन इमामोकुम सुम-म इन्नल इमामता फ़ी वुल्दी मिन सुल्बेही इलल क़ेयामते।

"ख़ुदा तुम्हारा वली है अ़ली तुम्हारे इमाम हैं और क़यामत तक इमामत उनके सुल्ब से मेरी औलाद में रहेगी।"

फिर फ़रमाया:

لَا تُحِلُّ اَمْرَةُ الْمُؤْمِنِيْنَ بَعْدِيْ لِاَحَدٍ غَيْرِهٖ۔

ला तोहिल्लो अम्रतुल मोअ्मेनी-न बअ़्दी ले अहदिन ग़ैरेही।

"मेरे बअ़्द लोगों की रहबरी और क़यादत और अमीरुल मोअ्मेनीन होना उनके अ़लावा किसी और के लिए जाएज़ नहीं है।"

एक और जगह फ़रमाया:

هٰذَا اَخِيْ وَوَصِيِّيْ وَوَاعِيْ عِلْمِيْ وَخَلِيْفَتِيْ عَلٰى مَنْ اٰمَنَ بِيْ۔

हाज़ा अख़ी व वसीयी व वाई इल्मी व ख़लीफ़ती अ़ला मन अमे-न बी।

"येह मेरा भाई है और मेरा वसी है और मेरे इल्म का ख़ज़ानादार है और हर उस शख़्स के लिए मेरा जानशीन है जो मुझ पर ईमान लाया है।"

एक और जगह इर्शाद फ़रमाया:

اَلنُّوْرُ مِنَ اللّٰهِ فِيَّ ثُمَّ فِيْ عَلِيٍّ ثُمَّ فِي النَّسْلِ مِنْهُ اِلَى الْقَائِمِ الْمَهْدِيِّ۔

अन्नूरो मिनल्लाहे फ़ी सुम-म फ़ी अ़लीयिन सुम-म फ़ीन्नस्ले मिनहो एलल क़ाएमिल महदी।

"ख़ुदा का नूर मुझ में है फिर अ़ली में फिर अ़ली की नस्ल में महदी क़ाएम तक।"

येह तमाम जुम्ले जो हमने अह्ले सुन्नत के बक़ौल इमामुल मुवर्रेख़ीन मोह़म्मद इब्ने जरीर त़बरी की किताब अल-वेलायत से नक़्ल किए हैं, *"मन कुन्तो मौलाहो फ़अ़लीयुन मौलाहो"* की वज़ाहत के लिए काफ़ी नहीं हैं! उन तमाम क़रीनों और दलीलों की मौजूदगी में फिर भी कोई शक बाक़ी रह जाता है कि मौला से मुराद औला बेनफ़्स और औला बित्तसर्रुफ़ है और ह़ज़रत अ़ली को हर एक पर औलवीयत-ओ-फ़ौक़ीयत ह़ासिल है उनकी मौजूदगी में किसी और को ख़ेलाफ़त-ओ-इमामत ज़ेब नहीं देती।

(३२) ख़ुत़्बा तमाम करने के बअ़्द रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

هَنِّئُوْنِيْ هَنِّئُوْنِيْ اِنَّ اللهَ خَصَّنِيْ بِالنُّبُوَّةِ وَ خَصَّ اَهْلَ بَيْتِيْ بِالْاِمَامَةِ۔

हन्नेऊनी हन्नेऊनी इन्नल्ला-ह ख़स़्सनी बिन्नुबूवते व ख़स़-स़ अह्ल बैती बिल इमामते।

"मुझे मुबारकबाद दो मुझे मुबारकबाद दो कि ख़ुदा ने मुझे नबूवत के लिए मख़्सूस किया और मेरे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम **को इमामत के लिए।"**

येह जुम्ला ह़ाफ़िज ख़रगोशी ने शरफुल मुस्तफ़ा में अह़मद बिन ह़म्बल से और उन्होंने बर्रा बिन अ़ाज़िब और अबू सईद ख़ुदरी से नक़्ल किया है। क्या येह जुम्ला ह़ज़रत अ़ली की वेलायत का ए़अ्लान नहीं कर रहा है।

(३३) जब ख़ुदा की जानिब से रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत के ए़अ्लान का हुक्म हुआ उस वक़्त आँह़ज़रत स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को तश्वीश लाह़क़ हुई वोह जानते थे कि लोग अभी भी जाहिली रस्मों से ज़्यादा नज़्दीक हैं वोह यही ख़याल करेंगे कि रसूले ख़ुदा अपने ख़ानदान के अफ़राद को हम पर मुसल्लत़ करना चाहते हैं और इस ग़लत त़र्ज़े फ़िक्री की बेना पर त़रह़ त़रह़ के हंगामें बरपा करेंगे। लेकिन ख़ुदा ने उनको हुक्म दिया अगर येह काम न किया तो अ़ज़ाब होगा।

(कन्ज़ुल उ़म्माल ६/१५३, तारीख़ुल ख़ोलफ़ा सुयूत़ी स़. ११४, मंज़िलुल अबरार बदख़्शानी स़. २०, दुर्रुल मन्सूर २/२९८)

दोस्ती का ए़अ्लान ऐसा कोई ए़अ्लान नहीं था जिसके बारे में रसूले ख़ुदा को ख़ौफ़ लाहक़ होता, क्योंकि मोअ्मिन को दोस्त रखना इस्लाम की इब्तेदाई तअ्लीम है। इसी बात को इब्ने अ़ब्बास और जाबिर इब्ने अ़ब्दुल्लाह अंस़ारी से ह़ाकिम ह़स्कानी ने शवाहिदुत्तन्ज़ील में नक़्ल किया है।

اَمَرَ اللّٰهُ تَعَالٰی مُحَمَّدًا صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ سَلَّمَ اَنْ یَنْصَبَ عَلِیًّا
لِلنَّاسِ فَخَبَرَهُمْ بِوِلَایَتِهٖ فَتَخَوَّفَ النَّبِیَّ۔

अ-म-रल्लाहो तआ़ला मोहम्मदन स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व सल्ल-म अन यन्स़बा अ़लीयन लिन्नासे फ़-ख़-ब-रहुम बेवेलायतेही फ़तख़व्वफ़न्नबी

"ख़ुदा ने मोहम्मद स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **को हुक्म दिया कि अ़ली को लोगों के लिए इमाम मुअ़य्यन कर दें और उनको उस बात से आगाह कर दें जिस बात से रसूले ख़ुदा** स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **को ख़ौफ़ लाहक़ हुआ।"**

(३४) रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने इस पूरे वाक़ए़ में बार बार लफ़्ज़े 'नस़्ब' इस्तेअ़्माल की है यअ़्नी मन्स़ूब किया है। येह लफ़्ज़ इमामत-ओ-रहबरी के साथ साज़गार है न कि दोस्ती के लिए क्योंकि दोस्ती के लिए येह लफ़्ज़ इस्तेअ़्माल नहीं होती है।

सय्यद अ़ली हमदानी ने मवद्दतुल क़ुर्बा में ख़लीफ़ए दुवुम उ़मर से येह रवायत नक़्ल की है - रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ग़दीर के दिन फ़रमाया:

نَصَبَ رَسُوْلُ اللهِ عَلِيًّا عَلَمًا فَقَالَ مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ۔

न-स़-ब रसूलुल्लाहे अ़लीयन अ़-लमन फ़क़ा-ल मन कुन्तो मौलाहो फ़अ़लीयुन मौलाहो।

"रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **ने अ़ली को अ़लामत-ओ-रहनुमा मुअ़य्यन किया और फ़रमाया मैं जिसका मौला हूँ अ़ली उसके मौला हैं।"**

अगर इस जुम्ले को इससे क़ब्ल (३३) जनाब इब्ने अ़ब्बास से नक़्ल शुदा जुम्ला *अ-म-रल्लाहो मोहम्मदन स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम अँय्यन्स-ब अ़लीयन लिन्नासे* से मिलाकर देखें तो ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-ख़ेलाफ़त किस क़द्र वाज़ेह हो जाती है।

(३५) शेख़ुल इस्लाम ह़मवीनी ने फ़राएदुस्सिमतैन मे अबू हुरैरा से येह रवायत नक़्ल की है कि ग़दीर में जिस चीज़ का एअ़्लान हुआ वोह ख़ुदा की जानिब से आख़री फ़रीज़ा था जिसको ख़ुदा ने लोगों पर वाजिब किया। इस फ़रीज़े के एअ़्लान के बअ़्द आयते इकमाल (आज तुम्हारा दीन कामिल कर दिया.....) नाज़िल हुई। यअ़्नी जो चीज़ ग़दीर में नाज़िल हुई वोह इससे पहले नाज़िल नहीं हुई थी। जबकि दोस्ती का एअ़्लान कोई नई बात नहीं थी और न दोस्ती का एअ़्लान आख़री फ़रीज़ा होगा। अब सिर्फ़ दो रास्ते रह जाते हैं या तो मौला के मअ़्ना वली और औला बिन्नफ़्स के करें या स़ह़ाबिए रसूल अबू हुरैरा दोस्ती की तकज़ीब करें।

(३६) अगर मौला के मअ़्ना दोस्त करें तो येह कोई ऐसी बात नहीं है जिसके बयान करने में लोगों को ख़ौफ़ लाहक़ हो जबकि ह़दीसे ग़दीर के बारे में मिलता है कि लोग इसके बयान करने से डरते थे। जब तक दरियाफ़्त करने वाले पर पूरा पूरा एअ़्तेमाद नहीं होता था उस वक़्त तक नक़्ल नहीं करते थे। अह़मद बिन ह़म्बल ने अपनी मुस्नद ४/३६८ में अ़त़ीया औफी से नक़्ल किया है मैं ज़ैद बिन

अरक़म के पास गया और कहा मेरे दामद ने ह़ज़रत अ़ली के बारे में ग़दीर के तअ़ल्लुक़ से आप से एक ह़दीस नक़्ल की है। मैं आप की ज़बानी सुनना चाहता हूँ। ज़ैद ने कहा तुम अह्ले इराक़ में दो रुख़ी बातें हैं। (मैं तुम पर एअ्तेमाद नहीं कर सकता)। मैंने कहा: आप मेरी जानिब से मुत्मइन रहें। फिर उन्होंने ह़दीसे ग़दीर बयान फ़रमाई।

इब्ने उ़क़दह ने अपनी किताब अल-वेलायत में मशहूर ताबई सईद बिन मुसय्यब से नक़्ल किया है कि मैं सअ्द वक़्क़ास के पास गया और कहा मैं आपसे सवाल करना चाहता हूँ मगर डर लगता है। उन्होंने कहा तुम तो मेरे चचा के फ़र्ज़न्द हो। (डरो नहीं) जो पूछना चाहते हो पूछो। इससे पता चलता है कि ह़दीसे ग़दीर का मफ़्हूम हरगिज़ दोस्ती नहीं है। बल्कि मज़्मून कुछ इस त़रह़ से है जो मौजूदा हुकूमत के मुवाफ़िक़ नहीं है और जिसका बयान करना सेयासत के ख़ेलाफ़ है और ख़त़रे से ख़ाली नहीं है। येह सारी बातें वेलायते अ़ली से मुतअ़ल्लिक़ हैं।

(३७) स़हरा नशीन अ़रब जो अपनी सरकशी और नाफ़रमानी में मशहूर थे। एक मर्तबा ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और "अस्सलामो अ़लैका या मौलाना" कह कर सलाम किया। येह सुनकर ह़ज़रत को बहुत तअ़ज्जुब हुआ कि उन लोगों ने उनकी वेलायत तस्लीम कर ली है। ह़ज़रत ने उनसे दरियाफ़्त किया: मैं किस त़रह़ तुम्हारा मौला हूँ? उनके सरबराह अबू अय्यूब अंसारी ने फ़रमाया हमने रसूले ख़ुदा से सुना है कि *मन कुन्तो मौलाहो फ़अ़लीयुन मौलाहो* येह ह़दीस अह़मद बिन ह़म्बल ने रेयाह़ बिन ह़ारिस से नक़्ल की है। तअ़ज्जुब है कि अ़रब के स़हरा नशीन मौला

के मअ्ना वली समझें और शहरों में रहने वाले मुतमद्दिन उ़लमा उसको दर्क न कर सकें।

(३८) १४ नंबर के ज़ैल मे यौमुल रह़बत का वाक़ेआ नक़्ल कर चुके हैं उस मज्मअ् में मौजूद रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के ३० अस़्ह़ाब ने वाक़ेअए ग़दीर की गवाही दी लेकिन वहाँ मौजूद अनस बिन मालिक, बर्रा बिन आ़ज़िब, जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली, ज़ैद बिन अरक़म, अ़ब्दुर्रह्मान बिन यदलिज और यज़ीद बिन वदीआ़ जो ग़दीर में मौजूद थे उन लोगों ने उस वक़्त गवाही नहीं दी।

ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने उन पर लअ्नत की और फ़रमाया:

"अगर उन लोगों ने दुश्मनी और ए़नाद की बेना पर ह़क़ को छिपाया है तो ख़ुदा उनको मुब्तेला कर—"

इस लअ्नत की बेना पर बर्रा और ज़ैद अंधे हो गए, अनस को बर्स हो गया, जरीर मुरतद हो गया।

(मुस्नद १/१९९, अल-मआ़रिफ़ इब्ने क़तबिया २५१, अल-अन्साब वल अश्राफ़, सीरह हलबी ३/३०२, अल-अरबईन जमालुद्दीन शीराज़ी १/२११)

अगर मौला के मअ्ना दोस्त हैं और लोगों ने अ़ली की दोस्ती को छिपाया था तो बहुत से लोग इस लअ्नत में मुब्तेला होते स़िर्फ़ येह चंद अफ़राद न होते क्योंकि इस जुर्म में तो बड़े बड़े शरीक हैं। येह लोग जो इन मुस़ीबतों में मुब्तेला हुए इससे स़ाफ़ ज़ाहिर है कि इन लागों ने ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-इमामत को पोशीदा रखने की कोशिश की थी और जो

लोग आज कल छिपाने की कोशिश कर रहे है वोह अपना अंजाम .....

(३९) ग़दीर का वाक़ेआ कोई पहला वाक़ेआ न था जहाँ रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने अपने बअ़्द ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-जानशीनी का एअ़्लान किया होता कि उ़लमाए अह्ले सुन्नत बख़याले ख़ुद इस ह़दीस की मनमानी तफ़सीर-ओ-तौजीह से मुत्मइन हो जाएँ। और अपने रहबरों को बचा ले जाएँ बल्कि ह़ज़रत रसूले अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने अपनी नूरानी ज़िंदगी में मुतअ़द्दिद मर्तबा येह बात लोगों के गोश गुज़ार की थी और ह़ज्जतुल वेदाअ़् की वापसी में ग़दीरे ख़ुम में इसको नेहायत स़राहत-ओ-वज़ाहत से बयान फ़रमाया था। और हर एक से बैअ़त ली थी। रसूले ख़ुदा ने अपनी बैअ़त की इब्तेदा में आयत *व अन्ज़िर अ़शीर-तकल अक़्रबी-न* (सूरए शोअ़रा, आयत २१४) के नाज़िल होने के बअ़्द ह़ज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब के तमाम फ़र्ज़न्दों को जमअ़् किया दअ़्वत के बअ़्द उन लोगों को अपनी नबूवत पर ईमान और मदद करने की दअ़्वत दी और फ़रमाया:

فَاَيُّكُمْ يُوَازِرُنِيْ عَلٰى هٰذَا الْاَمْرِ عَلٰى اَنْ يَكُوْنَ اَخِيْ وَ وَصِيِّيْ وَ خَلِيْفَتِيْ فِيْكُمْ؟

फ़अय्योकुम योवाज़िर्नी अ़ला हाज़ल अम्रे अ़ला अँय्यकू-न अख़ी व वस़ीयी व ख़लीफ़ती फ़ीकुम?

"कौन है जो मेरी मदद करे ताकि मेरा भाई, वस़ी और तुम्हारे दरमियान मेरा जानशीन हो?"

चालीस (४०) आदमियों में से सिर्फ़ अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने इस दअ़्वत को क़बूल किया और रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की आवाज़ पर लब्बैक कहा। इसके बअ़्द रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने एअ़्लान फ़रमाया:

اِنَّ هٰذَا اَخِیْ وَوَصِیِّیْ وَخَلِیْفَتِیْ فِیْکُمْ فَاسْمَعُوْا لَهٗ وَاَطِیْعُوْا۔

इन-न हाज़ा अख़ी व वस़ीयी व ख़लीफ़ती फ़ीकुम फ़स्मऊ लहू व अत़ीऊ।

"येह मेरा भाई है मेरा वस़ी है और तुम्हारे दरमियान मेरा जानशीन है।"

दअ़्वते ज़ुलअ़शीरा ह़दीसे ग़दीर का इज्माल है और ह़दीसे ग़दीर दअ़्वते ज़ुलअ़शीरा की तफ़स़ील है। अह्ले सुन्नत ह़दीसे ग़दीर की तौजीह कर सकते हैं मगर दअ़्वते ज़ुलअ़शीरा की किस त़रह़ तौजीह-ओ-तावील करेंगे? येह ह़दीस अह्ले सुन्नत की अक्सर किताबों में मौजूद है।

(अल-कामिल २/२४, तारीख़े अबुलफ़ेदा १/११६, शर्हे नहजुल बलाग़ा ३/३८४, मोह़म्मद ह़ुसैन हैकल हयाते मोहम्मद, तब्ए़ अव्वल १०४, तारीख़े त़बरी २/२१६, तफ़सीरे त़बरी ९/७४)

(४०) ह़दीसे ग़दीर में लफ़्ज़े मौला की ख़ुद रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने वज़ाह़त फ़रमाई है। जिसके बअ़्द फिर किसी बह़्स की ज़रूरत नहीं है। शेख़ुल इस्लाम ह़मवीनी ने फ़राएदुस्सिमत़ैन मे बुज़ुर्ग ताबई जनाब सुलैम बिन क़ैस से रवायत नक़्ल की है। ख़ेलाफ़ते उ़स्मान के ज़माने में कुछ २०० लोग मस्जिद में इ़ल्मी गुफ़्तुगू में मशग़ूल थे और क़ुरैश के फ़ज़ाएल बयान कर रहे थे। उन

लागों में मोहम्मद बिन अबी बक्र, अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, अ़ब्दुर्रह्मान, त़लहा, ज़ुबैर, मिक़दाद, ज़ैद बिन साबित, जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, अनस बिन मालिक..... शरीक थे। जब येह लोग क़ुरैश के फ़ज़ाएल बयान कर रहे थे, ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम और उनके अह्लेबैत (इमाम ह़सन, इमाम हुसैन, अ़ब्दुल्लाह बिन जअ़्फ़र.....) ख़ामोशी से सुन रहे थे। लोगों ने ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम से कहा क्यों ख़ामोश हैं। आप भी कुछ बयान फ़रमाइए। उस वक़्त हज़रत ने फ़रमाया:

"आप लागों ने जो फ़ज़ाएल बयान किए येह आपसे या आपके ख़ानदान से मुतअ़ल्लिक़ हैं।"

सबने कहा नहीं, बल्कि येह तो ख़ुदा ने मोह़म्मद और उनके ख़ानदान की बेना पर अ़ता किए हैं। ह़ज़रत ने फ़रमाया सच कहा। क्या तुम येह नहीं जानते कि दुनिया-ओ-आख़ेरत की जो भी नेकी तुमको मिलती है वोह हम अह्लेबैत के वास्ते से मिलती है किसी और ज़रीए़ से नहीं, यहाँ तक कि गुफ़्तुगू ह़दीसे ग़दीर तक पहुँची। ह़ज़रत ने फ़रमाया रसूले ख़ुदा ने नमाज़े जमाअ़त के बअ़्द ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया:

ऐ लोगो! तुमको मअ़्लूम है ख़ुदा वन्द आ़लम मेरा मौला है और मैं मोअ़्मेनीन का मौला हूँ मैं उन पर ख़ुद उनसे ज़्यादा एख़्तेयार रखता हूँ। सब ने कहा हाँ या रसूलुल्लाह। इस के बअ़्द ह़ज़रत स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

قُمْ يَا عَلِيُّ فَقُمْتُ فَقَالَ مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ اَللّٰهُمَّ ...

कुम या अ़ली फ़कुम्तो फ़क़ा-ल मन कुन्तो मौलाहो फ़अ़लीयुन मौलाहो अल्लाहुम्मा.....

"ऐ अ़ली खड़े हो। मैं खड़ा हुआ और रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया मैं जिसका मौला हूँ अ़ली उसके मौला हैं....."

उस वक़्त सलमान फ़ारसी ने सवाल किया, किस त़रह़ की वेलायत? रसूल ने फ़रमाया:

وِلَائَهٗ كَوِلَائِیْ مَنْ كُنْتُ اَوْلٰی بِهٖ مِنْ نَفْسِهٖ۔

वेलाअह़ू कवेलाई मन कुन्तो औला बेही मिन नफ़्सेही।

"मेरी वेलायत की त़रह़, जिस त़रह़ मैं उन पर सबसे ज़्यादा एख़्तेयार रखता हूँ।"

इतनी वज़ाहत के बअ़्द अब मज़ीद किसी बह़्स-ओ-गुफ़्तुगू की ज़रूरत नहीं है।

इसी त़रह़ की एक ह़दीस़ अ़ली बिन ह़मीद क़ुरैशी ने शम्सुल अख़बार २८ में नक़्ल की है। रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से *मन कुन्तो मौलाहो.....* के मअ़्ना दरियाफ़्त किए गए। आँह़ज़रत ने फ़रमाया:

"ख़ुदा मेरा मौला है वोह मुझ पर मुझसे ज़्यादा एख़्तेयार रखता है। उसके मुक़ाबले में मेरा कोई इरादा-ओ-एख़्तेयार नहीं है और मैं मोअ्मेनीन का मौला हूँ।"

यअ़्नी उन पर उनसे ज़्यादा एख़्तेयार रखता हूँ मेरे मुक़ाबले में उनका कोई इरादा-ओ-एख़्तेयार नहीं हैं। और जिसका मैं मौला हूँ और जिस पर मुझे एख़्तेयारात ह़ास़िल हैं मेरे मुक़ाबले में उसका कोई इरादा-ओ-एख़्तेयार

नहीं है, अ़ली उसके मौला हैं। अ़ली को उन सब पर ख़ुद उनसे ज़्यादा एख़्तेयारात ह़ासि़ल हैं। अ़ली के मुक़ाबले में किसी को कोई एख़्तेयार नहीं है।

सैयद अ़ली हमदानी ने मवद्दतुल क़ुर्बा में इसी से मिलती जुलती ह़दीस़ नक़्ल की है। रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ख़ुत़्बए ग़दीर के दौरान इर्शाद फ़रमाया—

> **"ऐ लोगो! क्या ख़ुदा मुझ पर औला नहीं है वोह मुझे अम्र देता है और नह्य करता है और मुझे ख़ुदा पर कोई वेलायत ह़ासि़ल नहीं है।" सब ने कहा हाँ या रसूलल्लाह।**

उस रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया:

> **"जिसका ख़ुदा और मैं मौला हूँ येह अ़ली भी उसके मौला हैं।"**

येह तुमको हुक्म देंगे और तुमको मनअ़् करेंगे। तुमको उन्हें हुक्म देने या मनअ़् करने का ह़क़ नहीं है।

इस तफ़सीर और वज़ाहत के बअ़्द भी कोई कसर रह जाती है? जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल पर ईमान रखता है और उनकी बातों को अव्वलीयत देता है और उनकी बातों को अपनी जान पर मुक़द्दम जानता है उसके लिए ज़ेबा नहीं है कि मौला की तफ़सीर वली-ओ-ह़ाकिम के अ़लावा कुछ और करे? मगर येह कि वोह अपने को ज़्यादा अक़्लमंद जानता हो—? बहरह़ाल जो लोग इन तमाम बातों के होते हुए फिर भी ग़लत मअ़्ना बयान कर रहे हैं वोह क़यामत के दिन ख़ुदा को क्या मुँह दिखाएंगे। और इस तह़रीफ़ का रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को क्या जवाब देंगे?